

माँ
दुर्गा ज्वेलर्स

सोने एवं चांदी के आभूषणों के विक्रेता

उचित व्याज में गिरवी रखी जाती है।

शॉप नं.-69, सी-नाकेट, सेक्टर-6, गिलाई

मो.-9424124911

वर्ष- 17 अंक - 353

www.shreekanchanpath.com

संस्थापक एवं प्रेरणास्रोत- स्व. श्रीमती रजनी अग्रवाल

भिलाई, मंगलवार 06 अक्टूबर 2026

पृष्ठ 8- मूल्य 1/-

खास-खबर

छत्तीसगढ़ में हल्की बारिश के आसार, बिजली गिरने की चेतावनी

रायपुर। छत्तीसगढ़ में मानसून की वापसी की संभावना जताई जा रही है। प्रदेश में सोमवार को मौसम साफ रहा और ज्यादातर हिस्सों में बारिश नहीं हुई। 6 अक्टूबर को प्रदेश के एक-दो स्थानों पर बहुत हल्की से हल्की बारिश हो सकती है। कुछ जगहों पर गरज-चमक के साथ बिजली गिरने की चेतावनी भी जारी की गई है। रायपुर में आज मौसम साफ रहने का अनुमान है। दिन का तापमान करीब 34 डिग्री और रात का तापमान 24 डिग्री के आसपास रह सकता है। बारिश थमने से कई जिलों में दिन का तापमान 30 डिग्री से ज्यादा रिकॉर्ड किया गया। सोमवार को प्रदेश में सबसे ज्यादा तापमान राजनंदगांव में 35एछ दर्ज किया गया। इसके बाद पेंड्रा रोड में 33.8 डिग्री, रायपुर में 34.4 डिग्री, बिलासपुर में 33.6 डिग्री और दुर्ग में 33.5 डिग्री तापमान रहा। वहीं, रात में सबसे कम तापमान अंबिकापुर में 18.6 डिग्री दर्ज किया गया। पेंड्रा रोड में 19.8 डिग्री और दुर्ग में 21.6 डिग्री न्यूनतम तापमान रहा।

बिलासपुर में बर्खास्त आरक्षक पर आय से अधिक संपत्ति का केस

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ राज्य में एन्टी करप्शन ब्यूरो ने सोमवार को आय से अधिक संपत्ति के मामले में जीआरपी थाना बिलासपुर के बर्खास्त आरक्षक संतोष कुमार राठौर क्रमांक 462 के खिलाफ ईओडब्ल्यू और एसीबी ने अभियोग पत्र मामनीय विशेष न्यायाधीश पीसी एक्ट के तहत कोर्ट में चालान पेश किया। आरक्षक पर आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने का केस दर्ज किया था। विभाग ने बताया कि आरोपी का आय 46,08,341 रुपए तथा व्यय 62,28,137 रुपए है, आय की तुलना में आरोपी का व्यय अधिक होना पाया गया। संग्रहित साक्ष्य से आय से अधिक संपत्ति धारित करने का अपराध सबूत पाये जाने पर आरोपी के विरुद्ध अभियोजन स्वीकृति प्राप्त कर कार्रवाई की गई है।

अस्पताल के महिला शौचालय में घुसा तेंदुआ, हमले में महिला घायल

कवर्धा। शहर के बीचोंबीच स्थित स्नेहा हॉस्पिटल के महिला शौचालय में सोमवार सुबह तेंदुआ घुसने से हड़कंप मच गया। तेंदुए के हमले में एक महिला को चोटें भी आईं। सूचना मिलते ही वन विभाग और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और अस्पताल परिसर को सुरक्षा घेरे में लेकर लोगों की आवाजाही रोक दी। करीब पांच घंटे की मशकत के बाद तेंदुए का सुरक्षित रेस्क्यू किया जा सका। उपचार और स्वास्थ्य परीक्षण के बाद उसे भोरमदेव अभयारण्य में छोड़ दिया गया। घटना की सूचना वन विभाग को सुबह करीब 10 बजे मिली। वन मंडल अधिकारी निखिल अग्रवाल के नेतृत्व में टीम तत्काल अस्पताल पहुंची। अस्पताल के सीसीटीवी फुटेज गलाने पर परिसर में तेंदुए की मौजूदगी की पुष्टि हुई। इस दौरान तेंदुए के हमले में घायल महिला का उपचार कराया गया। वन विभाग के अनुसार, नियमानुसार महिला को मुआवजा दिया जाएगा।

भारी बारिश के दौरान 255 नागरिकों को सुरक्षित निकालने वाली एसडीआरएफ टीम सम्मानित

23 जवानों को दिया गया प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। 25, 26 एवं 27 सितंबर 2026 को दुर्ग जिले एवं सीमावर्ती क्षेत्रों में भारी अतिवृष्टि के कारण नदियों एवं स्थानीय नालों का जलस्तर बढ़ने से उत्पन्न जलभराव की स्थिति में एसडीआरएफ टीम द्वारा बचाव एवं राहत कार्य किया गया। आपदा की स्थिति में तत्परता एवं जिम्मेदारी के साथ बचाव कार्य करने वाले एसडीआरएफ के 23 जवानों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

भारी अतिवृष्टि के कारण शिवनाथ नदी, खारून नदी तथा लगभग 30 स्थानीय नालों में जलस्तर बढ़ने से कई क्षेत्रों में

श्रीकंचनपथ

सांध्य दैनिक

RNI. Reg. No. CHHHIN/2009/30534

डाक पंजीयन क्रं.-छ.ग./दुर्ग/1000000029/2026-28

लीपा पोती नहीं सिर्फ सच

प्रिंट और डीजिटल मीडिया में सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए

संपर्क करे
9303289950
7987166110



आईआईटी में बेटियों का दबदबा : आंकड़ा 20 फीसदी के पार, तिरुपति व चेन्नई फेवरेट

नईदिल्ली। सरकार को इंजीनियरिंग संस्थानों में बेटियों की हिस्सेदारी 20 फीसदी पहुंचाने के लक्ष्य को छह साल बाद सफलता मिली है। सभी 23 आईआईटी द्वारा तैयार जेईई एडवांस्ड 2026 की रिपोर्ट के मुताबिक, आईआईटी और एनआईटी में बेटियों का आंकड़ा बढ़ रहा है। प्रीमियम इंजीनियरिंग संस्थानों में बेटियों का भरोसा बढ़ा है। 2019 से साल दर साल बेटियों की अतिरिक्त सीट बढ़ाने पर काम हुआ था। इसका असर अब दिखने लगा है।

आईआईटी और एनआईटी में बीटेक पाठ्यक्रमों में बेटियों की संख्या बढ़ाने के लिए 2017-18 में 20 फीसदी अतिरिक्त सीट दी गई थी। अब आईआईटी में यह आंकड़ा 20.22 फीसदी जबकि एनआईटी में यह आंकड़ा 30 फीसदी तक पहुंच गया है। इस साल बेटियों ने सबसे अधिक भरोसा आईआईटी तिरुपति और आईआईटी मद्रास पर जताया है। तिरुपति में 21.26 फीसदी तो आईआईटी मद्रास में 21.12 फीसदी बेटियों ने दाखिला लिया है।



आईआईटी में कुल 18,861 सीटों पर हुआ दाखिला

इस साल आईआईटी में कुल 18,861 सीटों पर दाखिला हुआ है। जबकि बेटियों ने 3814 सीटों पर दाखिला लिया है। इसमें से आईआईटी बॉम्बे में 19.77 फीसदी, आईआईटी दिल्ली व आईआईटी इंदौर में 20.54 फीसदी, आईआईटी मद्रास में 21.12, आईआईटी तिरुपति में 21.26 फीसदी, आईआईटी कानपुर में 20.39, आईआईटी रुड़की में 20.63 फीसदी, आईआईटी गुवाहाटी में 20.35 फीसदी जबकि आईआईटी खड़गपुर में 19.31, आईआईटी जम्मू, जोधपुर, पलकड़ व गोवा में 20 फीसदी, आईआईटी मंडी में 20.12, आईआईटी रोपड़ में 20.20, आईआईटी बनारस में 20.06 फीसदी बेटियों ने दाखिला लिया है। आईआईटी में दाखिले की कठिन प्रतियोगिता के बीच 37 महिला उम्मीदवारों ने (जेंडर-न्यूट्रल पूल) के तहत सीटें हासिल की हैं। यानी 37 बेटियों ने सामान्य सीटों पर सफलता हासिल की है।

बालोद में शादी करने से मना करने पर युवती पर एसिड से हमला, मास्टरमाइंड सहित दो आरोपी गिरफ्तार

■ तीन माह पहले बनाई थी योजना, स्कूल फ्रेंड से करवाया एसिड अटैक



बालोद। शादी का प्रपोजल ठुकराने पर बालोद में हेड कॉन्स्टेबल की बेटी पर एसिड अटैक हुआ। सोमवार दोपहर बाद हुई इस घटना से पूरे बालोद शहर में हड़कंप मच गया। आरोपी युवती के साथ पहले कोचिंग में पढ़ता था। 22 साल की छात्रा आमापारा की लाइब्रेरी से पढ़कर घर लौट रही थी, तभी आत्मानंद स्कूल के सामने सिंचाई कॉलोनी में उस पर एसिड एसिड अटैक हुआ। पुलिस ने मामले में मुख्य आरोपी और उसके दोस्त को गिरफ्तार कर लिया। मंगलवार दोपहर को बालोद पुलिस सभागार में पूरे मामले का खुलासा किया गया। पुलिस के मुताबिक मुख्य आरोपी बालोद कुंदरगपारा निवासी यश कुमार सोनकर है जिसने अपने दोस्त बीजापुर निवासी करण कुंजाम के साथ साजिश रची।

बता दें सोमवार दोपहर को आमापारा की लाइब्रेरी से पढ़कर घर लौट रही छात्रा पर एसिड से हमला किया गया। घटना के बाद छात्रा को बालोद जिला अस्पताल ले जाया गया। हालत गंभीर होने पर उसे बेहतर इलाज के लिए रायपुर रेफर किया गया है। सूचना के बाद पुलिसआरोपी युवक सीसीटीवी में भागते हुए नजर आया था। एसिड फेंककर आरोपी तत्काल तांदुला डैम की ओर फरार हो गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए

पुलिस अधीक्षक किरण गंगाराम चव्हाण के निर्देशन तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक चंद्रकांत गवर्ना के मार्गदर्शन में व्यापक सर्च अभियान चलाया गया साथ ही उप पुलिस अधीक्षक विनय साहू के नेतृत्व में विशेष टीम गठित कर सॉटिथों से संचना के बाद पुलिसआरोपी युवक सीसीटीवी में भागते हुए नजर आया था। एसिड फेंककर आरोपी तत्काल तांदुला डैम की ओर फरार हो गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए

दोस्त के साथ मिलकर रची थी साजिश

तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर पीडित युवती के कथित प्रेमी यश कुमार सोनकर, वर्तमान निवासी कुंदरूपारा, बालोद को संदेह के घेरे में लिया गया। कड़ाई से पूछताछ करने पर यश सोनकर ने पीडित युवती से प्रेम संबंध स्वीकार किया तथा किसी अन्य जगह अफेयर एवं शादी हेतु स्वीकार नहीं किए जाने से गुस्से में आकर करीब तीन माह पूर्व अपने स्कूल फ्रेंड करण कुंजाम, निवासी भैरमगढ़, बीजापुर के साथ मिलकर युवती पर एसिड फेंकने की योजना बनाना स्वीकार किया। इस दौरान यश सोनकर लगातार युवती को मनाने का प्रयास कर रहा था। युवती द्वारा तैयार नहीं होने की स्थिति में उसने अपने दोस्त करण कुंजाम को 26 सितंबर को बालोद बुलाया। 27 सितंबर को एसिड खरीदकर गणेश झॉकी के दौरान घटना को अंजाम देने की प्लानिंग की गई, लेकिन कड़ी सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए आरोपियों ने उस समय घटना को अंजाम नहीं दिया।

दूसरी बार में दिया वारदात को अंजाम

पहला प्रयास असफल होने के बाद 5 अक्टूबर को दोपहर 12.30 बजे जब युवती लाइब्रेरी से अपने घर वापस लौट रही थी, तभी यश सोनकर के कहने पर करण कुंजाम द्वारा युवती पर एसिड फेंका गया। घटना के बाद करण कुंजाम तत्काल मौके से फरार

होकर तांदुला बांध की ओर भागा। वहां से लिफ्ट लेकर झलमला, मरकाटोला होते हुए चारामा पहुंचा। आरोपी यश सोनकर द्वारा अपराध स्वीकार किए जाने के बाद पुलिस द्वारा करण कुंजाम की तलाश की गई तथा उसे कोंडागांव से हिरासत में लिया गया। प्रकरण में दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर आगे की वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

महिला मित्र से बदसलूकी पर विवाद, युवक की हत्या

■ मोहन नगर थाना क्षेत्र का मामला

दुर्ग। हैरिटेज स्कूल के पीछे हरिनगर स्थित एक पीजी में विवाद के बाद 26 वर्षीय युवक की चाकू से हमला कर हत्या का मामला सामने आया है। घटना मंगलवार दोपहर करीब 2:30 से 3 बजे के बीच की बताई जा रही है। पुलिस ने मामले में एक आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार मृतक चित्रेश सहारे (26), पिता अशोक



सहारे अपने दोस्त रवि के पीजी रूप में महिला मित्र के साथ आया था। इसी दौरान पीजी में रहने वाले वैभव और यशवंत यादव ने सिगरेट मांगने को लेकर विवाद किया। महिला मित्र के साथ कथित तौर पर मिसबिहेव करने को बात को लेकर भी विवाद बढ़ गया।

बताया गया कि विवाद के दौरान वैभव और यशवंत ने चित्रेश के साथ हाथ-मुक्के से मारपीट की और चाकू से हमला कर दिया। चाकू के वार मृतक के पैर और जांघ में लगे। गंभीर रूप से घायल चित्रेश को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

घटना की सूचना मिलने के बाद मोहन नगर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू की। शव को जिला अस्पताल दुर्ग की मर्चुरी में रखवाया गया है। नगर पुलिस अधीक्षक दुर्ग हर्षित

मेहर ने बताया कि मोहन नगर पुलिस ने मामले में आरोपी वैभव मानकर (23), पिता अशोक मानकर, निवासी लखौली पुलिस चौकी संजय नगर, थाना कोतवाली, राजनंदगांव को हिरासत में लिया है। उससे घटना के संबंध में पूछताछ की जा रही है। पुलिस दूसरे आरोपी की भूमिका की भी जांच कर रही है। पुलिस ने घटना के कारणों और विवाद के पूरे घटनाक्रम को लेकर जांच शुरू कर दी है। मामले में आगे की कार्रवाई पूछताछ और जांच के तथ्यों के आधार पर की जाएगी।

लखनऊ में बाढ़ क्षेत्र का सीएम योगी ने किया हवाई दौरा

लखनऊ ए. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का हवाई दौरा किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि राजधानी में बाढ़ से बचाव के लिए करीब 40 किलोमीटर लंबा फैजुल्लागंज से नैमिष तक तटबंध बनेगा। उन्होंने बताया कि तटबंध को स्वीकृति दे दी गई है। मानसून समाप्त होने के बाद धनराशि जारी कर निर्माण शुरू कराया जाएगा।

ग्रीन कॉरिडोर की तर्ज पर बनने वाले इस तटबंध के ऊपर एक रास्ता बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने सिंचाई विभाग के प्रमुख सचिव को गोमती किनारे सर्वे कर प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए। तटबंध के बाहर बारिश का पानी



जमा न हो, इसके लिए पंपिंग सेट लगाए जाएंगे। इनसे नदी का जलस्तर बढ़ने पर आबादी क्षेत्र में जमा पानी बाहर निकाला जा सकेगा।

मुख्यमंत्री ने फैजुल्लागंज से नैमिष तक हवाई सर्वे भी किया। उन्होंने बीकेटी में बाढ़ प्रभावित परिवारों से मुलाकात कर राहत सामग्री बांटी।

राहत एवं बचाव कार्यों का जायजा लेते हुए अधिकारियों को प्रभावित परिवारों को स्कूलों व मैरिज हॉल में बनाए राहत शिविरों में पहुंचाने के निर्देश दिए। शिविरों में दोनों समय गर्म भोजन, बच्चों के लिए दूध और गर्भवती महिलाओं के लिए पोषक आहार और पशुओं के लिए भूसा और चोकर उपलब्ध कराने को कहा। सीएम ने कहा कि बाढ़ में डूबने या आकाशीय बिजली से जनहानि पर पीडित परिवार को चार लाख रुपये की सहायता मिलेगी। पूरी तरह क्षतिग्रस्त मकान के पात्र परिवार को आवास योजना से घर दिया जाएगा। फसल नुकसान का सर्वे कर किसानों को मुआवजा मिलेगा।

हरमनप्रीत ने दिया बड़ा झटका, तीनों फॉर्मेट की कप्तानी छोड़ने का ऐलान

■ भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान ने सोशल मीडिया में दी जानकारी

नईदिल्ली ए. भारतीय महिला क्रिकेट टीम की विश्व कप विजेता कप्तान हरमनप्रीत कौर ने बड़ा फैसला लिया है। उन्होंने मंगलवार को भारतीय टीम की तीनों फॉर्मेट की कप्तानी छोड़ने का ऐलान किया। हरमनप्रीत ने सोशल मीडिया पर भावुक संदेश साझा करते हुए कहा कि यह फैसला उनके लिए आसान नहीं था, लेकिन अब वह बतौर खिलाड़ी आगे बढ़ना चाहती हैं। हरमनप्रीत ने अपने संदेश में लिखा, ‘आज मैं भारतीय महिला क्रिकेट टीम के सभी फॉर्मेट की कप्तानी छोड़ रही हूँ। यह आसान फैसला नहीं है। इसमें वर्षों की यादें, भावनाएं, त्याग और ऐसे पल जुड़े हैं, जो जिंदगी भर मेरे साथ रहेंगे।

हरमनप्रीत ने पांच टेस्ट, 51 वनडे और 155 टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में भारत की कप्तानी की है। कप्तान के रूप में उनका आखिरी काम पिछले महीने निशिन में भारतीय टीम को लगातार दूसरी बार एशियाड का स्वर्ण पदक दिलाना रहा। हरमन के कप्तानी छोड़ने का फैसला उस बैठक के एक दिन बाद आया है, जिसमें उन्होंने भारतीय टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना और मुख्य कोच अमोल मजूमदार के साथ बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया से मुलाकात की थी। इस बैठक में भारतीय महिला टीम के आगे के प्लान पर चर्चा हुई थी।



टीम के लिए खुद की महत्वाकांक्षाएं पीछे रखीं : हरमन

हरमन ने कहा कि उन्होंने भारतीय महिला क्रिकेट और टीम के लिए अपना सब कुछ दिया। कई मौकों पर उन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रदर्शन, विकास और निजी महत्वाकांक्षाओं को भी टीम के हित में पीछे रखा। उन्होंने लिखा, ‘मैंने इस टीम और भारतीय महिला क्रिकेट को अपना खुन, पसीना और समय दिया है। कई बार अपने खेल और निजी महत्वाकांक्षाओं का एक हिस्सा भी पीछे रखा, क्योंकि मेरा मानना था कि टीम सबसे पहले है।’ कप्तान के तौर पर लिए गए फैसलों को लेकर होने वाली आलोचनाओं का भी उन्होंने जिक्र किया। हरमनप्रीत ने कहा कि कई फैसले मुश्किल थे और हमेशा समझे नहीं गए, लेकिन उनका एक ही उद्देश्य था— टीम को बेहतर बनाना और दूसरी खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का मौका देना।

संपादकीय

जिम्मेदारी का पर्यटन

तीर्थयात्रियों व प्लास्टिक को कीजिए नियंत्रित

यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि हिमालय के संवेदनशील इलाकों में धार्मिक पर्यटन के लिये निकले लोग ऐसा व्यवहार करते हैं मानो यह क्षेत्र उनकी विलासिता की सैरगाह हो। वे अपनी सुख-सुविधाओं को प्राथमिकता देते हैं और इस इलाके के नैसर्गिक परिवेश से खिलवाड़ करते हैं। मिलती सूचनाओं के अनुसार इस साल सितंबर के मध्य तक, चारधाम यात्रा के दौरान तीर्थयात्री 800 टन से अधिक का कचरा वहां फेंक आए हैं। वहीं यदि हेमकुंट साहिब और वैली ऑफ फ्लावर्स का कचरा भी इसमें शामिल कर लें तो मात्रा और अधिक हो जाती है। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि हिमालय पर्वत शृंखलाओं में तीन हजार

“यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं में तीन हजार मीटर से ज्यादा ऊंचाई पर प्लास्टिक की बोतलें, रैपर और डिस्पोजेबल चीजें पायी गई हैं। निस्संदेह, इससे यही संकेत मिलता है कि यात्री इन धार्मिक स्थलों के आसपास ऐसा व्यवहार कर रहे हैं जैसे यह उनकी मौज-मस्ती की जगह हो। यह जानते हुए कि इन दुर्गम इलाकों में शहरों की तरह कचरे निपटान की पर्याप्त व्यवस्था और क्षमता नहीं है। सही मायने में यदि तीर्थयात्री किसी धार्मिक स्थान की यात्रा पर निकलें तो तीर्थयात्रा पर आध्यात्मिक छाप पड़नी चाहिए, न कि प्लास्टिक के कचरे की। यही वजह है कि संवेदनशील हिमालयी क्षेत्रों में धार्मिक पर्यटन का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल केदारनाथ धाम के हालिया आंकड़ों को चेतावनी की तरह लिया जाना चाहिए। बताते हैं कि अप्रैल से आगस्त के बीच इस तीर्थ स्थल पर तीर्थयात्रियों द्वारा छोड़ा गया 50.30 टन कचरा जमा हुआ। यह कचरा वर्ष 2023 से 2025 के बीच किसी भी पूरे साल में जमा हुए कचरे से कहीं ज्यादा पाया गया है। जो हिमालयी पारिस्थितिकीय संतुलन की दृष्टि से बेहद चिंता का विषय है। लेकिन तमाम तीर्थ यात्रियों के इस अराजक व्यवहार के विपरीत ‘कैरी मो बैक’ अभियान की पहल एक नई उम्मीद भी जगाती है।

उल्लेखनीय है कि कैरी मो बैक मुहिम के तहत लगभग पांच हजार तीर्थयात्री इस इलाके में करीब 18 किलोमीटर के रास्ते में 12 टन से अधिक कंघ्रेष्ठ प्लास्टिक वापस नीचे लेकर आए हैं। निस्संदेह, यह पहल काबिले तारीफ व प्रेरणादायी है। ऐसी सुनि्र तीर्थयात्रियों को पर्यावरण संरक्षण की पहल में भागीदार बनाती है। इसके बावजूद ये प्रयास एक जिम्मेदार पर्यटन नीति की जगह नहीं ले सकते। ऐसे में बड़ा प्रश्न यह है कि पहाड़ों तक इतना कचरा क्यों और कैसे पहुंचता है। ऐसा भी नहीं है कि यह समस्या केवल केदारनाथ तक ही सीमित हो। लेकिन इसके बावजूद कुछ सकारात्मक उदाहरण नई उम्मीद भी जगाते हैं। इस साल अमरनाथ यात्रा के दौरान, दोबारा इस्तेमाल होने वाले बर्तनों और पानी भरने की सुविधाओं में विस्तार की वजह से अच्छे परिणाम सामने आए हैं। इस यात्रा के दौरान यात्रियों की संख्या में 17 फीसदी की बढ़ोतरी के बावजूद प्रति यात्री द्वारा छोड़े जाने वाले कचरे में 15 फीसदी की कमी आई है। निश्चित रूप से ऐसे सकारात्मक प्रयास आम बात हो जानी चाहिए। तीर्थ यात्रा के प्रबंधन से जुड़े अधिकारियों को सिर्फ तीर्थयात्रियों को अपील करने के बजाय उनकी जवाबदेही तय करने की दिशा में कदम उठाने चाहिए। सिंगल-यूज प्लास्टिक को रेगुलेट करना, बोतलों और पकैजिंग पर डिपॉजिट सिस्टम लागू करना, रिप्लि्ट प्वाइंट बढ़ाना, कचरे को स्रोत पर ही अलग-अलग करने की व्यवस्था करना जरूरी है। वेंडरों को उनके उत्पादों से पैदा होने वाले कचरे के लिये जिम्मेदार बनाना जरूरी है। वहीं दूसरी ओर धार्मिक पर्यटन स्थलों पर लगातार बढ़ते तीर्थयात्रियों के दबाव को टालने के लिये वैज्ञानिक तरीके से उनकी संख्या को सीमित करने की जरूरत होती है। निश्चित रूप से आस्था का मतलब पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी से छूट नहीं है। किसी भी पवित्र पर्वत की सीमाओं का सम्मान करना, उस आस्था का सम्मान करने का ही एक हिस्सा है, जिसे वह पर्वत दर्शाता है। तीर्थ यात्रियों को अपना कचरा वापस लेकर जाना चाहिए। सरकारों की भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बेहिसाब तीर्थयात्रा के बुरे नतीजों का बोझ पहाड़ों पर न पड़े।

बढ़ती ग्लेशियर झीलों से सुरक्षा-पेयजल संकट की आहट

मुकुल व्यास

ग्लेशियर एक दशक पहले की तुलना में तेजी से पिघल रहे हैं। इससे जल सुरक्षा पर खतरा मंडरा रहा है, क्योंकि सदी के मध्य तक यह इलाका ‘पीक वॉटर’ अथवा पानी की उपलब्धता के अधिकतम स्तर पर पहुंच जाएगा। पीक वॉटर की स्थिति में नदी का बहाव बढ़ना बंद हो जाता है और घटने लगता है। इससे पानी की सुरक्षा पर गहरा असर पड़ेगा।

पिघलते ग्लेशियर ऊंचे हिमालय के स्वरूप को बदल रहे हैं। वहां ग्लेशियर झीलें तेजी से बढ़ रही हैं और उनका आकार भी फैल रहा है। जलवायु परिवर्तन दरअसल दुनिया के सबसे ऊंचे इलाकों को बदल रहा है, इसलिए इस बदलाव पर बारीकी से नजर रखने की जरूरत है। एक नए अध्ययन में हिमालय में हो रहे परिवर्तन का खुलासा किया गया है। यह अध्ययन प्राग की चार्ल्स यूनिवर्सिटी की रिसर्च आयुषी पांडे ने किया है। लगभग 30 सालों के उपग्रह पर्यवेक्षण के आधार पर पांडे ने 1994 और 2023 के बीच भारत के पश्चिमी हिमालय में अलकनंदा बेसिन की 74 ग्लेशियर झीलों में हुए बदलावों को ट्रैक करने के लिए लैंडसैट और सेंटिनल-2 की तस्वीरों का इस्तेमाल किया। इससे जो तस्वीर हमारे सामने आती है, वह तेजी से बदलते लैंडस्केप की है। जैसे-जैसे ग्लेशियर पिघलते हैं, उनका पिघला हुआ पानी अधिक ऊंचाई वाली झीलों को भरता है और नई झीलें बनाता है। सही हालात होने पर ये झीलें एक साथ बहुत बड़ी मात्रा में पानी छोड़ सकती हैं।

अध्ययन से पता चला कि हिमालय में पुरानी झीलें बढ़ रही हैं और नई झीलें बन रही हैं। अध्ययन में शामिल 0.01 वर्ग किलोमीटर से बड़ी 24 ग्लेशियर झीलों में झीलों का कुल क्षेत्रफल 1994 में 0.97 वर्ग किलोमीटर से बढ़कर 2023 तक 1.62 वर्ग किलोमीटर हो गया। यह सिर्फ तीन दशकों में 67 प्रतिशत की बढ़ोतरी है।



लेकिन मौजूदा झीलों का बढ़ना ही सब कुछ नहीं है। अध्ययन में 57 बिल्कुल नई ग्लेशियर झीलों की पहचान की गई, जो अध्ययन के दौरान बनीं, जिससे अलकनंदा बेसिन में कुल झीलों की संख्या 131 हो गई। इन नई झीलों में से 18 झीलें पहले ही 0.01 वर्ग किलोमीटर के पैमाने से बड़ी हो चुकी हैं। कुछ झीलें तो चोंकाने वाली रफ्तार से फैली हैं। वसुंधरा झील 1994 और 2023 के बीच 261 प्रतिशत बढ़ी। इसी दौरान बलबाला झील 119 प्रतिशत बढ़ी।

मुख्य आंकड़ों के अलावा, अध्ययन में 27 ऐसी ग्लेशियर झीलों की पहचान की गई, जिनमें बहुत ज्यादा बढ़ोतरी देखी गई। इनमें बद्रीनाथ के ऊपर की ओर स्थित एक झील भी शामिल है। वसुंधरा झील के तेजी से फैलने पर विशेष रूप से बारीकी से ध्यान देने की जरूरत बताई गई है। ग्लेशियर वाली झील के आकार और स्थिरता में बदलाव का सीधा असर नीचे के इलाकों पर पड़ सकता है। रिसर्चर का

कहना है कि इन झीलों की लगातार निगरानी और आगे और ज्यादा विस्तार से जांच की जरूरत है।

दरअसल, मुख्य चिंता ग्लेशियर झीलों में अचानक बाढ़ को लेकर है। इस तरह की बाढ़ को ‘ग्लेशियर लेक आउटबर्स्ट फ्लड’ (जीएलओएफ) भी कहा जाता है। यह स्थिति तब बनती है, जब बर्फ, चट्टान या मलबे से रकी हुई पानी की भारी मात्रा अचानक छूट जाती है और पानी, कीचड़ और मलबे को बहुत तेज और विनाशकारी ताकत के साथ नीचे की ओर बहा ले जाती है। यह अध्ययन ऐसे समय में आया है, जब नेपाल में 26 अगस्त, 2026 को विश्व की अस्थिरता के बाद राहत और बचाव का काम चल रहा है। वह आपदा कोई आम जीएलओएफ नहीं थी, लेकिन इसने दिखाया कि ऊंचे पहाड़ों में अचानक आने वाली बाढ़ के नतीजे कितने गंभीर हो सकते हैं।

आयुषी पांडे ने कहा, ‘हाल की बाढ़ इस बात की याद दिलाती है कि ऊंचे

पहाड़ी इलाकों की लगातार निगरानी कितनी जरूरी है, जहां भारी बारिश, ग्लेशियर झील का बढ़ना, ढलान का अस्थिर होना और भूकंप जैसी कई आपदाएं एक साथ मिलकर नीचे के इलाकों पर असर को और बढ़ा सकती हैं।’ उन्होंने कहा, ‘बड़े और दुर्गम इलाकों की जांच-पड़ताल के लिए उपग्रह डेटा बहुत काम का होता है। इनसे हम नई बनी झीलों की पहचान कर सकते हैं, झील के आकार में बदलाव को माप सकते हैं, तेजी से बढ़ रही झीलों का पता लगा सकते हैं और उन झीलों को चुन सकते हैं, जिनकी विस्तृत जांच की जरूरत है। इस काम के लिए बड़े पैमाने पर लॉजिस्टिकल सपोर्ट और आर्थिक मदद की जरूरत है, जिसमें सीमाओं के पार वैज्ञानिक सहयोग और डेटा शेयरिंग भी शामिल है। इसे एक साझा क्षेत्रीय चिंता के तौर पर देखा जाना चाहिए।’

यह आखिरी बात ही इस चुनौती की असल जड़ है। हिमालय कई देशों में फैला

हुआ है। किसी एक देश के पहाड़ों में बनने या बढ़ने वाली ग्लेशियर वाली झील अपनी सीमाओं से दूर के समुदायों और बुनियादी ढांचे के लिए भी खतरा पैदा कर सकती है। नेपाल में हाल ही में आई बाढ़ इस बात का एक बड़ा उदाहरण है कि कैसे ऊंचे पहाड़ों से जुड़ा खतरा तेजी से मानवीय संकट में बदल सकता है। नए सैटेलाइट डेटा से पता चलता है कि उत्तर भारत के पहाड़ों में भी इसी तरह के खतरे चुपचाप बढ़ रहे हैं।

फिलहाल, यह स्टडी शोधकर्ताओं को कुछ ऐसी जानकारी देती है, जो उन्हें इस दुर्गम और मुश्किल इलाके में शायद ही कभी मिलती है। इस स्टडी से तीन दशकों का यह स्पष्ट रिकॉर्ड मिला है कि जमीन का स्वरूप ठीक कहां और कितनी तेजी से बदल रहा है। क्या इस जानकारी से लगातार जमीनी जांच और सीमा-पार सहयोग को बढ़ावा मिलेगा? यह एक कठिन सवाल है। फिर भी, इस जानकारी से यह तय करने में मदद मिल सकती है कि यह इलाका खतरों से निपटने के लिए कितना तैयार है। अगली तेजी से फैलती झील समुदायों को बचने का ज्यादा मौका नहीं देगी। इस बीच, इस महीने जारी एक अन्य स्टडी के अनुसार, हिमालय एक अहम मौड़ पर पहुंच रहा है, क्योंकि ग्लेशियर एक दशक पहले की तुलना में तेजी से पिघल रहे हैं। इससे जल सुरक्षा पर खतरा मंडरा रहा है, क्योंकि सदी के मध्य तक यह इलाका ‘पीक वॉटर’ अथवा पानी की उपलब्धता के अधिकतम स्तर पर पहुंच जाएगा। पीक वॉटर की स्थिति में नदी का बहाव बढ़ना बंद हो जाता है और घटने लगता है। इससे पानी की सुरक्षा पर गहरा असर पड़ेगा। चूंकि भारत की जीडीपी का 20 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा हिमालय पर निर्भर है, इसलिए यह इलाका देश के राष्ट्रीय आर्थिक ढांचे का एक अहम हिस्सा है, जिस पर करोड़ों लोग निर्भर हैं।

लेखक विज्ञान मामलों के जानकार हैं।

मुश्किल कामयाबी के बावजूद सोच बदलने की चुनौती

ज्योति मल्होत्रा

भारतीय महिला खिलाड़ियों की रिले रेस में स्वर्णम जीत गौरवान्वित करती है जो उन्होंने कड़े संघर्ष व ढेरों मुश्किलों के बावजूद हासिल की। ऐसे में, उनके प्रति घिसी-पिटी सोच का क्या मतलब? दरअसल, उनकी चुनौतियां आज भी सुरक्षा, भेदभाव और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के रूप में कायम हैं। जब आप कमतर आंकी गई अपनी महिला धावकों को रेस ट्रैक पर सबसे श्रेष्ठ धावकों से आगे निकलते हुए देखते हैं – जैसा कि पिछले सप्ताह आइची-नागोया में एशियाई खेलों में 4×400 मीटर फाइनल में कोयंबटूर की विष्णु रामराज ने किया, पहले चीनी और फिर बहरीनी धावक को पछाड़कर, तब आप सोचते हैं कि सर्वश्रेष्ठ होने का अर्थ क्या है। विष्णु ने तीसरे चक्र के बाद उत्तर प्रदेश के सहारनपुर की प्राची चौधरी से बैटन लिया; तो कर्नाटक के कूर्ग की एमआर पूवम्मा ने दूसरा चक्र दौड़ा; उसने आगे यह बैटन बंदूक की आवाज पर दौड़ शुरू करने वाली हरियाणा के सोनीपत जिले के गुमाड गांव की किरण पहल से पाया था।

जब आप अपने सामने अद्भुत होता देखते हैं, तो तारीफ के वही पुराने तौर-तरीके आपके दिमाग में घूमने लगते हैं। मसलन, मांसपेशियां, नसें, सालों का प्रशिक्षण और निरंतर तड़प जो सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए प्रेरित करती रहती है– ये सब मिलकर एक दौड़ में दिखे, जिसमें देश के अपेक्षाकृत कम जाने जाते हिस्सों से आई

चार महिलाएं दौड़ीं। भारत की बेटियां। हमारी ‘गोल्डन गर्ल्स’। विविधता में एकता। उत्तर-दक्षिण का मिलन और फर्क मिट गया।

लेकिन तब क्या उन घिसी-पिटी मान्यताओं का असल में कोई अर्थ रहता है,जब ये महिला धावक –जो कुपोषण भरे बचपन, सामाजिक दबावों, गरीबी से जूझने में कड़ा संघर्ष, हर वक्त यौन उत्पीड़न की आशंका और छोटे गांव-छोटे शहरों की अव्यवस्था भरी जिंदगी के बीच भी अपने सपनों के लिए जुझती हैं और जीतती हैं? जहां एक ओर ये लड़कियां पिछले हफ्ते की शुरूआत में आइची-नागोया में अपनी जिंदगी के लिए दौड़ रही थीं वहीं भारत की कोयंबटूर की विष्णु रामराज ने किया, पहले चीनी और फिर बहरीनी धावक को पछाड़कर, तब आप सोचते हैं कि सर्वश्रेष्ठ होने का अर्थ क्या है। (हरियाणा की तरह के टोटके आजमाएं हैं, ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ से लेकर महिलाओं के बैंक खाते में पैसे डालने तक और उज्ज्वला गैस सिलेंडर जैसी सरकारी योजनाओं में बदलाव किए हैं जो महिलाओं को प्राथमिकता सुनिश्चित करती हैं। भले ही इनमें से कई योजनाओं का मकसद महिलाओं का एक राजनीतिक वोट बैंक बनाना हो –लेकिन कम से कम उन्होंने कोशिश करना तो नहीं छोड़ा। तो फिर

पीएम मोदी की बात करें तो उन्होंने कई तरह के टोटके आजमाए हैं, ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ से लेकर महिलाओं के बैंक खाते में पैसे डालने तक और उज्ज्वला गैस सिलेंडर जैसी सरकारी योजनाओं में बदलाव किए हैं जो महिलाओं को प्राथमिकता सुनिश्चित करती हैं। भले ही इनमें से कई योजनाओं का मकसद महिलाओं का एक राजनीतिक वोट बैंक बनाना हो –लेकिन कम से कम उन्होंने कोशिश करना तो नहीं छोड़ा। तो फिर

महिलाओं को ऐसा लगना क्यों जारी है कि उनकी कोई अहमियत नहीं? शायद इसलिए कि इन राजनीतिक कदमों के पीछे का उद्देश्य उतना नेकनीयत नहीं जितना होना चाहिए। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के ध्येय के साथ कई शर्तें भी जुड़ी हैं –इनमें सबसे बड़ी समस्या है कोटा देने से पहले संसद और विधानसभाओं में सीटों की संख्या में विस्तार करना।

महिला हॉकी गोलकीपर सविता पुनिया, जिन्होंने चीन के विरुद्ध पड़नल मैच में पेनल्टी स्ट्रोक रोककर टीम को 1–0 से गोल्ड मेडल जिताने में मदद की, हरियाणा के सिरसा की निवासी हैं। मई 2026 में सिरसा में जन्म के समय लिंगानुपात बहुत खराब रहा है – प्रति 1,000 लड़कों पर 883 लड़कियां। सरकार सबसे खराब स्थिति वाले जिले गुरुग्राम व जींद हैं, जहां प्रति 1,000 लड़कों पर क्रमशः 863 और 872 लड़कियां हैं।)

मिर्ज़ोरम के कोलासोटे में महिला हॉकी लालेरमिसयामी हमराजोटे ने महिला हॉकी प्रथमिकता सुनिश्चित करती हैं। भले ही इनमें से कई योजनाओं का मकसद महिलाओं का एक राजनीतिक वोट बैंक बनाना हो –लेकिन कम से कम उन्होंने कोशिश करना तो नहीं छोड़ा। तो फिर

करते हुए शानदार जीत दिलाई। टेटे कहती हैं कि वह पूर्व महिला हॉकी कप्तान अरुंधा लकड़ा को अपना आदर्श मानती हैं, जिन्होंने जुलाई में हॉकी इंडिया के महासचिव भोला नाथ सिंह पर ‘यौन उत्पीड़न और संस्थागत डराने-धमकाने’ का आरोप लगाया था। सलीमा ‘गोल्डन गर्ल्स’ ने 44 साल में पहली बार गोल्ड मेडल जीता और 2028 ओलंपिक में अपनी जगह पक्की की है। शायद सबसे मुश्किल सवाल अभी भी उनसे नहीं पूछे जा रहे जो सत्ता में हिस्सेदारी करना नहीं चाहते – आप ऐसा क्यों नहीं करते? महिलाओं के बारे में ऐसा क्या है, जिससे आप इतना डरते हैं?

सर्वविदित है, लिंगानुपात में दक्षिणी राज्यों में केरल सबसे आगे है। शायद हरियाणा व पंजाब जैसे राज्यों में ये आंकड़ा कम है (क्रमशः प्रति 1,000 पुरुषों पर 898 व 924 महिलाएं), हालांकि इन तीनों राज्यों की आबादी करीब एक जैसी है – 3 करोड़।

लेकिन, यहां दिलचस्प तथ्य है : केरल की मौजूदा विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या (140 में से 11) है जो पंजाब (117 में 13) और हरियाणा (90 में 13) की तुलना में कम है। हालांकि 1957 में हुए पहले चुनाव से ही केरल में महिला विधायक रही हैं – जब ईएमएस नंबूदरीपाद के नेतृत्व में दुनिया की पहली कम्युनिस्ट सरकार चुनी गई थी – लेकिन तब से लेकर महिलाओं का प्रतिनिधित्व कभी भी 10 प्रतिशत से ज्यादा नहीं रहा।

इस बीच, पंजाब में फरवरी में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले अलग तरह की दौड़ चल रही है। कांग्रेस पार्टी को नया राज्य अध्यक्ष मिल गया – परगत सिंह, जो पूर्व हॉकी ओलंपियन हैं। यह बदलाव कांग्रेस हाईकमान ने बड़ी आसानी से व बिना किसी हंगामे के कर दिखाया, जिसमें पूर्व अध्यक्ष अमरिंदर सिंह ‘राजा बड़िया’ का कद घटा दिया है। वर्डिंग अब लंदन में छुट्टियां मनाने जाएंगे। बाकी कांग्रेस पार्टी अपनी एह पर बढ़ चुकी है– आभार व उम्मीद, दोनों के साथ– दो भावनाएं, जो बीते हफ्ते राजनीति व खेल, दोनों ही क्षेत्रों में देखी गई।

गृह मंत्री अमित शाह ने जालंधर के प्राचीन देवी तालाब मंदिर में पूजा करने के बाद दूसरी भावना (उम्मीद) का जिक्र किया। चेहरे पर उम्मीद साफ़ छائی थी, उन्होंने बीजे गुरुवार एक रैली में कहा कि हालांकि वह पंजाब में राजनीति पर बात करने नहीं आए थे, लेकिन उन्होंने वादा किया कि अगर ‘आप हमें एक बार सत्ता में लाते हैं’, तो बीजेपी सूबे को नशे की समस्या से मुक्त कर देगी। कम भीड़ वाली रैली में उत्साह में नारे लगाए गए, लेकिन बीजेपी के कद्दावर नेता इरानी कम भीड़ से खुश नहीं रहे होंगे, खासकर मुच में हुई अमृतसर से खबर लिखी– कुछ यात्रा पड़ावों पर तो सिर्फ 25–30 नशा-पीड़ित परिवारों की नुमाइश की गई, जिन्हें रैली के अग्रणी बीजेपी नेता लाए थे।

लेखिका ‘द ट्रिब्यून’ की प्रधान संपादक हैं।

पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता और स्मरण का अवसर

गणेश काला

पूर्वजों का श्राद्ध व तर्पण उनके प्रति कृतज्ञता और आत्मचिंतन का मौका है। साईस डीएनए से पीढ़ियों की निरंतरता समझाती है, वहीं दर्शन इसे स्मृति व संस्कारों से जोड़ता है। तर्पण का जल अतीत से संबंध का प्रतीक है। इस समय व्यक्ति पूर्वजों का नाम लेकर मानता है कि उसका वर्तमान अकेले उसने नहीं बनाया।

श्राद्ध और तर्पण को केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, स्मृति, कृतज्ञता और पीढ़ियों से मिले संस्कारों को समझने का एक भारतीय दृष्टि के रूप में भी देखा जा सकता है। हमारे जेहन में शायद अपने पूर्वजों के नाम, गांव, कुछ पारिवारिक घटनाओं और उनसे जुड़ी कुछ स्मृतियां ही हैं। लेकिन हमारी सोच, व्यवहार, डर, आदतें और जीने के कुछ तरीके भी पिछली पीढ़ियों से हम तक पहुंचे हो सकते हैं।

विज्ञान के मुताबिक, हमारी जैविक संरचना में डीएनए की अहम भूमिका है। हमें अपने माता-पिता से आनुवंशिक सामग्री मिलती है और इस तरह जैविक निरंतरता पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। वहीं शोधों में सामने आया कि जीन की अभिव्यक्ति पर माहौल, जीवनशैली और अनुभवों का प्रभाव पड़ सकता है। इसे समझने को एपिजेनेटिक्स अहम क्षेत्र है। यहीं से भारतीय परंपरा में पूर्वजों के स्मरण व श्राद्ध-तर्पण को देखने का नया रास्ता खुलता है।

मानव शरीर का बड़ा हिस्सा जल से बना है। भारतीय दर्शन ने जल को पंचमहाभूतों में स्थान दिया। वहीं तर्पण में जल अर्पित करने में गहरा सांस्कृतिक प्रतीक है—‘में



अपने अस्तित्व की उस धारा को स्वीकार करता हूं, जो मुझसे पहले भी थी और मेरे बाद भी आगे जाएगी।’ जल अर्पित करते समय व्यक्ति पूर्वजों में घूमने लगते हैं। अतएव अतीत को याद कर स्वीकार करता है कि उसका वर्तमान अकेले उसने नहीं बनाया।

यह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। कई भावनाएं ऐसी होती हैं जिन्हें हम व्यक्त नहीं कर पाते। किसी पूर्वज के प्रति कृतज्ञता, पुराने पारिवारिक दु:ख की याद या पीढ़ियों से चली आ रही अनकही कहानी-इन सबका हमारे मन पर प्रभाव हो सकता है। श्राद्ध व्यक्ति को उन भावनाओं को देखने और स्वीकार करने का अवसर देता है। हम केवल अपना वर्तमान लेकर पैदा नहीं होते।

हमारा व्यक्तित्व परिवार, समाज, संस्कार, वातावरण और अनुभवों से बनता है। परिवार में पीढ़ियों से चली आ रही कुछ आदतें और व्यवहार भी अगली पीढ़ियों में दिख सकते हैं। लेकिन इसे सीधे यह कहना कि ‘पूर्वजों की स्मृतियां डीएनए में रिकॉर्ड होकर उसी रूप में हमारे भीतर चलती हैं’, वैज्ञानिक रूप से सही नहीं होगा। डीएनए और व्यवहार के बीच संबंध कहीं अधिक जटिल है।

आनुवंशिकता, वातावरण और जीन-अभिव्यक्ति के अध्ययन ने यह समझने का रास्ता जरूर खोला है कि जीवन के अनुभव जैविक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकते हैं। इसीलिए वैज्ञानिक पीढ़ियों के बीच जैविक और पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन करते हैं। इस दृष्टि से

‘पूर्वजों के डीएनए पैटर्न की हीलिंग’ को वैज्ञानिक सिद्ध तथ्य के बजाय एक विचारात्मक रूपक के रूप में समझना अधिक उचित होगा।

जल और भावनाओं के संबंध की चर्चा में जापानी लेखक और शोधकर्ता मसारू इमोटो का नाम अक्सर लिया जाता है। हालांकि उनके निष्कर्षों की मुख्यधारा के वैज्ञानिक प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है। फिर भी भारतीय तर्पण परंपरा को समझने में जल का प्रतीकात्मक महत्व इससे कहीं पुराना है। भारतीय चिंतन में जल केवल भौतिक पदार्थ नहीं, जीवन और चेतना की यात्रा का प्रतीक भी रहा है। इसलिए तर्पण के समय जल अर्पित करने को ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रिया मान सकते हैं, जिसमें व्यक्ति अपने अतीत के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है व अपना वर्तमान उस परंपरा से जोड़ता है।

श्राद्ध का सबसे बड़ा परिवर्तन शायद भीतर होता है। जब कोई श्रद्धा से अपने पूर्वजों को स्मरण करता है, तो वह स्वयं अपने जीवन को देखने लगता है कि जीवन केवल ‘मैं’ तक सीमित नहीं है। मेरे भीतर मेरे माता-पिता हैं। मेरे माता-पिता के भीतर उनके माता-पिता की जीवन-कथा है। इस प्रकार मनुष्य स्वयं को एक लंबी जीवन-शृंखला की कड़ी के रूप में देख सकता है। यहीं श्राद्ध कृतज्ञता की परंपरा बन जाता है।

अद्वैत दर्शन भी कहता है कि अस्तित्व मूलतः विभाजित नहीं है। व्यक्ति स्वयं को अलग मानता है, लेकिन व्यापक अस्तित्व में सब एक ही निरंतरता का हिस्सा हैं। आधुनिक विज्ञान की भाषा अलग है। विज्ञान पदार्थ और ऊर्जा, कोशिका, अणु, परमाणु, आनुवंशिकी और जैविक प्रक्रियाओं की बात करता है। फिर भी दोनों

के बीच एक संवाद संभव है। ब्रह्मांड में पदार्थ निरंतर रूप बदलता है। पृथ्वी के तत्व हमारे शरीर का हिस्सा बनते हैं। भोजन शरीर में जाता है। शरीर प्रकृति में लौटता है। जीवन की जैविक निरंतरता पीढ़ियों के जरिए आगे बढ़ती है। भारतीय चिंतन इसी निरंतरता को पंचमहाभूत, जीवन-चक्र और पूर्वज परंपरा की भाषा में देखता रहा है।

वैज्ञानिक प्रमाण यह नहीं कहते कि श्राद्ध या तर्पण करने से किसी का डीएनए सीधे बदल जाता है। इसी तरह तर्पण को आनुवंशिक रोगों के उपचार का वैज्ञानिक तरीका भी नहीं माना जा सकता। लेकिन मनुष्य केवल डीएनए नहीं। उसके भीतर स्मृतियां हैं, भावनाएं हैं, रिश्ते, संस्कार हैं और जीवन को देखने की धारणाएं हैं। यदि किसी पारिवारिक दु:ख को समझने, स्वीकारने व उसके साथ स्वस्थ संबंध बनाने से व्यक्ति के तनाव और व्यवहार में सकारात्मक बदलाव आता है, तो उसका प्रभाव मानसिक सेहत पर पड़ सकता है। इस तरह ‘हीलिंग’ का अर्थ डीएनए बदलना नहीं, बल्कि अपने भीतर पीढ़ियों से चली आ रही भावनात्मक व व्यावहारिक धारणाएं पहचानना हो सकता है।

आजकल बच्चों को अपने दादा-दादी और परदादा-परदादी की कहानियां तक पता नहीं होतीं। ऐसे समय में श्राद्ध हमें पूछने का अवसर देता है–हम कहां से आए हैं और आने वाली पीढ़ी को हम क्या देना जाएंगे? शायद तर्पण केवल अतीत को जल देने का नाम नहीं। खुद में कृतज्ञता जगाने का अवसर भी है। यह भी कि हम एक लंबी जीवन-यात्रा की कड़ी हैं। शायद यही श्राद्ध की मनोवैज्ञानिक व्याख्या है–पूर्वजों को मुक्त करने से पहले अपने भीतर जमा भावनाओं को मुक्त करना। जब श्राद्ध भय से निकलकर कृतज्ञता बनती है, तब श्राद्ध केवल एक कर्मकांड नहीं रहता। वह आत्मचिंतन बन जाता है, परिवार को स्मृति बन जाता है। ...और आने वाली पीढ़ी के प्रति हमारी जिम्मेदारी का स्मरण आता है।

लेखक होलिस्टिक वेलेनेस कोच हैं।

सेवा संकल्प

मुश्किलों के बीच सालिक राम ने देखा पक्के घर का सपना, अब हुआ अपना

रायपुर। कभी बारिश की आहट के साथ ही सालिक राम के परिवार की चिंता बढ़ जाती थी। छत से टपकता पानी, घर के भीतर नमी और सामान को भीगने से बचाने की जद्दोजहद हर बरसात की कहानी थी। सीमित आय में परिवार की जरूरतें पूरी करने के साथ बार-बार घर की मरम्मत कराना भी आसान नहीं था। आज परिस्थितियां बदल चुकी हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना से मिला पक्का घर उनके परिवार के लिए वर्षों की परेशानियों से राहत और सुरक्षित भविष्य का आधार बना है। मोहला-मानपुर-अम्बगढ़ चौकी जिले के अंबागढ़ चौकी विकासखंड अंतर्गत ग्राम कौडू टोला निवासी सालिक राम अपने तीन सदस्यीय परिवार के साथ रहते हैं। सीमित आर्थिक संसाधनों के बीच परिवार की रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करना उनकी प्राथमिकता थी। ऐसे में स्वयं के संसाधनों से पक्का मकान बनाना उनके लिए लंबे समय तक एक सपना ही बना रहा। कच्चे घर में रहने के कारण मौसम बदलते ही परिवार की मुश्किलें बढ़ जाती थीं। बारिश में छत से पानी टपकता था और घर में नमी फैल जाती थी। सामान को पानी से बचाने की चिंता अलग रहती थी। तेज बारिश और खराब मौसम में परिवार को घर की सुरक्षा की चिंता सताती थी।

नारायणपुर की बेटियों ने नुकड़ नाटक से जगाई अलख

रायपुर। सुदूर अंचल की बेटियां अब न केवल शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम गढ़ रही हैं, बल्कि सामाजिक जागरूकता की सशक्त ध्वजवाहक बनकर भी उभर रही हैं। नारायणपुर स्थित कन्या शिक्षा परिसर में आयोजित ‘नमो सेवा: अनकही कहानियां’ कार्यक्रम के तहत छात्राओं ने अपनी रचनात्मकता और जीवंत अभिनय से केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की एक अनूठी पहल की। कला, संवाद और सामाजिक जिम्मेदारी के इस अद्भुत संगम में विद्यार्थियों ने नुकड़ नाटक के माध्यम से जटिल योजनाओं को रोजमर्रा के उदाहरणों में ढालकर बेहद सरल और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया। मंच पर छात्राओं ने स्वच्छता को केवल अभियान न मानकर दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया, वहीं ‘पीएम-सूर्य घर योजना’ के जरिए स्वच्छ ऊर्जा अपनाकर भविष्य को रोशन करने का संदेश दिया।

बच्चों ने रंगों और भाषणों से उकेरा नवसलमुक्त व सशक्त भारत का सपना

रायपुर। नारायणपुर स्थित बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ‘सेवा संकल्प अभियान’ के अंतर्गत जिला स्तरीय चित्रकला एवं भाषण प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ‘विकसित भारत 2047’ के संकल्प को जनभागीदारी और बच्चों की रचनात्मकता से जोड़ने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में जिले भर के विभिन्न स्कूलों से आए लगभग 650 विद्यार्थियों ने अपनी कला और ओजस्वी विचारों का हुनर दिखाया। प्रतियोगिता के दौरान प्राथमिक से लेकर हायर सेकेंडरी स्तर तक के विद्यार्थियों ने ‘नक्सलवाद मुक समाज’, ‘डिजिटल इंडिया’, ‘सेना का शौर्य’, ‘नया कश्मीर’, ‘महिला सशक्तिकरण’ और ‘मेरे सपनों का भारत’ जैसे गंभीर व महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी सोच को बेहद खूबसूरती से प्रस्तुत किया। बच्चों ने कैनवास पर रंगों और रेखाओं के माध्यम से एक ऐसे भारत का चित्र उकेरा जहां शांति, सुरक्षा, स्वच्छता, तकनीकी शिक्षा और सामाजिक समानता का बेहतर समन्वय हो, वहीं भाषण के जरिए युवाओं की भूमिका और सुरक्षित समाज की आवश्यकता पर जोर दिया।

आंगनबाड़ी और मितानिन बहनों की सेवा बच्चों के स्वस्थ भविष्य की मजबूत नींव : श्रीचंद सुंदरानी

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत देवेन्द्र नगर साई नगर, भाटापारा, स्थित दो आंगनबाड़ी केंद्रों द्वारा संयुक्त रूप से ‘आंगन मिलन सेवा एवं पोषण माह 2026’ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, मितानिन बहनों एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जनसेवा के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में चल रहे ‘सेवा संकल्प अभियान’ के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में रायपुर उत्तर विधानसभा के मुख्य अधिकार श्री श्रीचंद सुंदरानी पूर्ण अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व जोन अध्यक्ष एवं



हेमू कालाणी वार्ड के पूर्व पार्षद दिलीप सारथी ने की। इस अवसर पर भाजपा नेता चिराग पंड्या विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक श्रीचंद सुंदरानी ने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और मितानिन बहनें बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य एवं समुचित देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। सेवा और समर्पण के

भाव से बच्चों के लिए पोषण आहार की व्यवस्था करने के साथ ही उनके स्वास्थ्य एवं विकास की निरंतर चिंता करना सराहनीय कार्य है। समाज के प्रति उनकी यह सेवा सम्मान और धन्यवाद की पात्र है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे दिलीप सारथी ने भी आंगनबाड़ी एवं मितानिन बहनों के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य और पोषण की

दिशा में जमीनी स्तर पर इनके द्वारा किया जा रहा कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं को इसी सेवाभाव और समर्पण के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों के बेहतर पोषण, स्वास्थ्य एवं सर्वांगीण विकास को लेकर भी चर्चा हुई तथा आंगनबाड़ी और मितानिन बहनों द्वारा किए जा रहे कार्यों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर आयोजक आंगनबाड़ी कार्यकर्ता प्रेमलता वर्मा, आयशा बानो, सहायिका ममता श्रीवास, जानकी यादव, सहायक आंगनबाड़ी कार्यकर्ता हरिप्रिया दीप, शोभा सारथी, दिव्या साहू, सहायिका भुनेश्वरी, मोना साहू सहित आदि लोग थे।



अपने हाथ से सामान्य काम कर पाने की यह खुशी बताती है कि ऐसी पहल किसी व्यक्ति के जीवन में कितना बड़ा बदलाव ला सकती है।

एक ही छत के नीचे मिला योजनाओं का लाभ: जिला स्तरीय सेवा संकल्प शिविर में विभिन्न विभागों ने मौके पर ही पात्र हितग्राहियों को योजनाओं और सेवाओं का लाभ प्रदान किया। राजस्व विभाग द्वारा आपदा प्रबंधन के अंतर्गत पांच बाढ़ प्रभावितों को कुल 6 लाख 50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इसके साथ ही 35 हितग्राहियों के अधिकार अभिलेख वितरित किए गए। श्रम विभाग द्वारा मिनीमाता महतारी जतन योजना के अंतर्गत एक हितग्राही को 20 हजार रुपए तथा मुख्यमंत्री मृत्यु एवं दिव्यांग सहायता योजना के तहत एक पात्र हितग्राही को एक लाख रुपये की सहायता राशि प्रदान की गई।

कृषि विभाग ने पांच किसानों को फसल बीमा प्रमाण पत्र और मत्स्य पालन विभाग ने तीन मत्स्य पालकों को जाल वितरित किए। स्वास्थ्य विभाग द्वारा वरिष्ठ



नागरिकों के वय वंदन कार्ड और पात्र नागरिकों के आयुष्मान कार्ड बनाए गए। शिविर में 12 नागरिकों के आधार विवरण का अद्यतन करने के साथ जन्म एवं मृत्यु पंजीयन से संबंधित आवेदन भी लिए गए।

बस्तर में विकास की नई तस्वीर - सांसद महेश कश्यप: बस्तर सांसद

महेश कश्यप ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों तथा आंतरिक सुिक्षा को मजबूत करने के लिए उठाए गए कदमों का सकारात्मक प्रभाव बस्तर में दिखाई दे रहा है। दशकों तक उग्रवाद के कारण बुनियादी सुविधाओं से वंचित रहे क्षेत्रों में अब सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं का तेजी से विस्तार हो रहा है। उन्होंने कहा कि प्रत्यक्ष लाभ अंतरण व्यवस्था, निःशुल्क राशन, पक्के आवास, शौचालय सहित विभिन्न योजनाओं का लाभ पारदर्शी तरीके से सीधे पात्र हितग्राहियों तक पहुंच रहा है। सेवा संकल्प शिविर के माध्यम से एक ही परिसर में विभिन्न विभागों की सेवाएं उपलब्ध होने से नागरिकों को कार्यालयों के चक्कर लगाने के बजाय मौके पर ही समस्याओं के समाधान और योजनाओं



का लाभ मिल रहा है। इस अवसर पर नगर निगम सभापति खेमसिंह देवांगन सहित अन्य जनप्रतिनिधि, कलेक्टर आकाश छिक्रा, पुलिस अधीक्षक शलभ सिन्हा, नगर निगम आयुक्त प्रवीण वर्मा, विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण एवं नागरिक उपस्थित थे।

रजिस्ट्री के बाद नामांतरण के लिए नहीं लगाने पड़े चकर

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। जमीन की रजिस्ट्री के बाद नामांतरण के लिए तहसील और पटवारी कार्यालय के बार-बार चक्कर लगाने की परेशानी अब तकनीक आधारित व्यवस्था से कम हो रही है। बलराजपुर निवासी गौतम सिंह ने इस बदलाव को स्वयं महसूस किया। पंजीयन विभाग की ऑटो म्यूटेशन सुविधा से रजिस्ट्री के बाद उनके नामांतरण की प्रक्रिया स्वतः आगे बढ़ी। इससे उन्हें अलग से तहसील और पटवारी कार्यालय जाने की जरूरत नहीं पड़ी। श्री सिंह के अनुसार इस व्यवस्था से उनका समय बचा और आने-जाने सहित अन्य खर्चों को मिलाकर करीब 10 हजार रुपये की बचत भी हुई। ‘सेवा संकल्प अभियान’ के तहत पंजीयन विभाग से संवाद में उन्होंने अपना अनुभव

साझा किया।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और वित्त एवं पंजीयन मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी के मार्गदर्शन में पंजीयन सेवाओं को सरल, सुगम, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित बनाने के लिए प्रक्रिया को जोड़ने, आधार आधारित ई-केवाईसी से पहचान सत्यापन और ब्याट्सऐप के माध्यम से पंजीयन संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने जैसी सुविधाओं से नागरिकों की अनावश्यक दौड़भाग कम करने का प्रयास किया जा रहा है।

गौतम सिंह ने बताया कि पहले जमीन की रजिस्ट्री के बाद नामांतरण के लिए अलग से तहसील और पटवारी कार्यालय जाना पड़ता था।

प्रदेशभर में 152 राहत शिविर स्थापित, लगभग 12 हजार प्रभावितों के रहने और भोजन की व्यवस्था

संकट की घड़ी में बाढ़ प्रभावितों के साथ मजबूती से खड़ी छत्तीसगढ़ सरकार

जनहानि, पशुहानि, मकान और फसल क्षति पर त्वरित आर्थिक सहायता, 2.16 करोड़ से अधिक की क्षतिपूर्ति राशि स्वीकृत एवं वितरित

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। छत्तीसगढ़ में भारी बारिश और बाढ़ से प्रभावित नागरिकों की सुरक्षा और उन्हें त्वरित राहत पहुंचाने के लिए राज्य सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर राहत एवं बचाव अभियान संचालित किया गया है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के निर्देश पर जिला प्रशासन और आपदा प्रबंधन की टीमें प्रभावित क्षेत्रों में लगातार सक्रिय हैं। प्रदेशभर में जलभराव और बाढ़ में फंसे 49 हजार 793 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया गया है। प्रभावित परिवारों के लिए 152 राहत शिविर स्थापित कर 11 हजार 945 से अधिक लोगों के रहने और भोजन की व्यवस्था की गई है।



रायपुर, धमतरी, बालोद, बलौदाबाजार, गरियाबंद, कोरबा, बेमेलरा, कबीरधाम, दुर्ग, रायगढ़ और जांजगीर-चांपा सहित अन्य जिलों के अनेक गांव भी बारिश और बाढ़ से प्रभावित हुए।

जनहानि के प्रकरणों में अब तक 16 लाख की राहत राशि प्रदान की जा चुकी है, जबकि 24 लाख से अधिक का भुगतान प्रक्रियाधीन है। पशुहानि के मामलों में प्रभावित पशुपालकों को 26.17 लाख से अधिक की सहायता राशि वितरित की जा चुकी है तथा 2.18 लाख की राशि का भुगतान शेष है। पूर्ण एवं आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त मकानों के लिए 1.61 करोड़ से अधिक की सहायता राशि स्वीकृत कर वितरित

की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त 220.26 लाख की सहायता राशि शीघ्र ही संबंधित हितग्राहियों के खातों में भेजी जाएगी। इसी प्रकार फसल क्षति के लिए 12.82 लाख की क्षतिपूर्ति राशि जारी की जा चुकी है, जबकि 4.96 लाख से अधिक की राशि का वितरण शेष है। इस प्रकार जनहानि, पशुहानि, मकान एवं फसल क्षति से प्रभावित लोगों को राहत पहुंचाने के लिए राज्य सरकार द्वारा सहायता और क्षतिपूर्ति की प्रक्रिया लगातार आगे बढ़ाई जा रही है। राज्य सरकार ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि प्रभावित नागरिकों को सहायता उपलब्ध कराने में किसी प्रकार का अनावश्यक विलंब न हो। रायगढ़, जांजगीर-चांपा, कोरबा, दुर्ग

49 हजार से अधिक लोगों का सुरक्षित रेस्क्यू

आपदा की गंभीरता को देखते हुए राज्य सरकार और जिला प्रशासन ने तत्काल राहत एवं बचाव कार्य प्रारंभ किए। आपदा प्रबंधन की टीमों ने दिन-रात अभियान चलाते हुए जलभराव वाले क्षेत्रों में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। प्रदेशभर में अब तक 49 हजार 793 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। इनमें अकेले सुकमा जिले में 40 हजार से अधिक तथा रायपुर जिले में 5,600 से अधिक लोगों का सुरक्षित रेस्क्यू किया गया। प्रभावित नागरिकों को सुरक्षित आश्रय उपलब्ध कराने के लिए प्रदेशभर में 152 राहत शिविर स्थापित किए गए। इन शिविरों में 11 हजार 945 से अधिक प्रभावित लोगों के रहने और भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित की गई।

प्रभावित परिवारों को तत्काल राहत पहुंचाने पर जोर

बारिश और बाढ़ से हुई जनहानि, पशुहानि, मकानों तथा फसलों की क्षति के मामलों में राज्य सरकार द्वारा प्रभावित परिवारों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की कार्यवाई तेजी से की जा रही है। बारिश और बाढ़ से संबंधित हादसों में प्रदेशभर में अब तक 15 लोगों की दुखद मृत्यु हुई है। इसके साथ ही 1,220 से अधिक पशुधन की हानि हुई है। प्राकृतिक आपदा से 2,103 मकान पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुए हैं, जबकि 7,947 मकानों को आंशिक क्षति पहुंची है। किसानों की 6,154 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में लगी फसलें भी प्रभावित हुई हैं। राज्य सरकार ने क्षति के आकलन के साथ ही पात्र प्रभावित परिवारों तक सहायता राशि पहुंचाने की प्रक्रिया को प्राथमिकता दी है।

और गरियाबंद सहित प्रभावित जिलों में राजस्व एवं पटवारी टीमों को शेष नुकसान का अंतिम आकलन जल्द से जल्द पूरा करने और पात्र हितग्राहियों को राहत राशि का त्वरित भुगतान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। प्रभावित क्षेत्रों में जिला प्रशासन द्वारा राहत एवं बचाव कार्यों के साथ नुकसान के आकलन और

आर्थिक सहायता वितरण की कार्यवाई समानांतर रूप से की जा रही है। राज्य सरकार की प्राथमिकता प्रत्येक प्रभावित नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित करने, जरूरतमंद परिवारों को तत्काल राहत देने और नुकसान से प्रभावित लोगों तक नियमानुसार आर्थिक सहायता शीघ्र पहुंचाने की है।

आंगन मिलन से पोषण जागरूकता को मिला जनसहभागिता का आधार



श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर । सूरजपुर जिले में सेवा संकल्प अभियान एवं राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आंगन मिलन एवं विशेष पोषण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। बच्चों के सर्वांगीण विकास, महिलाओं के स्वास्थ्य और

कुपोषण उन्मुलन के उद्देश्य से हुए इस कार्यक्रम में ग्रामीण महिलाओं, किशोरी बालिकाओं, बच्चों और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यक्रम में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हरी साग-सब्जियों, मौसमी फलों और पारंपरिक खाद्य पदार्थों से तैयार व्यंजनों की प्रदर्शनी लगाई गई। ‘मेरी पौष्टिक थाली’ के माध्यम से दैनिक भोजन में विविधता रखने और स्थानीय खाद्य पदार्थों को शामिल करने की जानकारी दी गई। महिलाओं को बच्चों, किशोरियों और गर्भवती महिलाओं की पोषण संबंधी आवश्यकताओं के बारे में बताया गया। साथ ही बच्चों के स्वास्थ्य, स्वच्छता और नियमित देखभाल में परिवार की भूमिका पर भी चर्चा की गई।

‘घर-घर मुनगा, हर घर मुनगा’ का संदेश देते हुए परिवारों को मुनगा लगाने और उसे दैनिक आहार में शामिल करने के लिए

प्रेरित किया गया। प्रतिभागियों को बताया गया कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पौष्टिक खाद्य पदार्थों का संतुलित उपयोग परिवार के बेहतर पोषण में सहायक हो सकता है। कुपोषण से बचाव के लिए संतुलित खान-पान के साथ स्वच्छता और समुदाय की सक्रिय भागीदारी को भी आवश्यक बताया गया।

आंगन मिलन कार्यक्रम में महिलाओं और बच्चों को पोषण एवं स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी संवाद और सहभागिता के माध्यम से दी गई। आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से साझा की गई जानकारी को घरों तक पहुंचाने में माताओं, किशोरियों और कार्यकर्ताओं की भूमिका पर जोर दिया गया।

कार्यक्रम में शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से पात्र हितग्राहियों को जोड़ने को प्राथमिकता दी गई। विभागीय अधिकारियों ने महतारी वंदन योजना को हितग्राही महिलाओं से संवाद कर उनके अनुभव जानने और उन्हें विभागीय योजनाओं की जानकारी दी। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत सूरजपुर जिले में ऐसी गतिविधियों के माध्यम से पोषण एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा पात्र महिलाओं और बच्चों तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है।

गंजेपन से मुक्ति
मात्र 1 घंटे में

COMPLETE
FAMILY SALON

हेयर रिप्लेसमेंट, 100% संतुष्टि की गारंटी

पहले

बाद में

JATU'Z

CUT N SHINE

93009-11331

रंगोली वैगलस के सामने, जयसवाल इलेक्ट्रॉनिक के बाजू में इंदिरा मार्केट, स्टेशन रोड, दुर्ग (छ.ग.)

GST No. 22AHMPB9621P122

PH.: 0748-4060131

अनुप ट्रेडर्स

ऑर्टिफिशियल ज्वेलरी के विक्रेता

लिंक रोड, केम्प-2, पावर हाउस, भिलाई

मो. 09826389666, 8839749539



‘सोच ही नहीं परवरिश भी बदलनी होगी’ एआई वीडियो मामले पर बोलीं जान्हवी कपूर

जान्हवी कपूर ने अपने एआई-मॉर्फ़ वीडियो पर चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक लंबा पोस्ट लिखा है। इसमें उन्होंने तकनीक के गलत इस्तेमाल की आलोचना की है।

अभिनेत्री जान्हवी कपूर ने अपनी और जूनियर एनटीआर की 2024 की फिल्म ‘देवरा’ के गाने ‘चुट्टामले’ के एआई-मॉर्फ़ वीडियो पर अपनी चुप्पी तोड़ी है। इस वीडियो पर काफी विवाद हो रहा था। जान्हवी ने इस मामले पर अपना बयान इंस्टाग्राम स्टोरीज पर शेयर किया है। उन्होंने महिलाओं को वस्तु की तरह पेश करने के लिए टेक्नोलॉजी के गलत इस्तेमाल की निंदा की है।

क्या बोलीं अभिनेत्री?

अभिनेत्री ने अपना बयान जारी करते हुए पोस्ट में लिखा ‘तकनीक का गलत इस्तेमाल करके महिलाओं को वस्तु की तरह पेश करना और उनकी सहमति के बिना काल्पनिक या छेड़छाड़ किए गए कंटेंट को प्रसारित करना बेहद पीड़ादायक है। यह यौन उत्पीड़न के करीब है। मेरे फिल्म उद्योग में लगभग हर महिला ने किसी न किसी रूप में इसका सामना किया है। यही नहीं, दुनिया भर में महिलाओं को तेजी से इस तरह के दुर्व्यवहार का शिकार बनाया जा रहा है।

सहमति को लेकर क्या बोलीं अभिनेत्री?

उन्होंने आगे लिखा ‘किसी महिला के शरीर को लेकर उसकी सहमति, उसकी पसंद और उसके प्रति सम्मान, इंसानियत की सबसे बुनियादी समझ का हिस्सा होना चाहिए। मगर हैरानी की बात है कि आज भी कुछ लोगों के लिए इन बातों को समझना इतना मुश्किल बना हुआ है। जबकि इसमें कुछ भी कठिन नहीं है।’

उन्होंने कहा कि यह समझना इतना मुश्किल क्यों है कि अगर कोई महिला लगातार पांच दिन किसी बात के लिए अपनी सहमति देती है और छठे दिन मना कर देती है, तो उसके उस इनकार का सम्मान करना जरूरी है। अगर कोई महिला मिनी स्कर्ट पहनती है, तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि किसी को उसकी स्कर्ट के नीचे कैमरा लगाने, गलत एंगल से तस्वीरें खींचने या उसके शरीर का अश्लील तरीके से इस्तेमाल करने को इजाजत मिल गई है।

अभिनेत्री ने बताई असल दिक्कत

‘देवरा’ की अभिनेत्री ने कहा ‘एक महिला किस बात को लेकर सहज है, वह अपनी सीमाएं कहाँ तय करती है और अपने शरीर के बारे में क्या फैसला लेती है, यह पूरी तरह उसका निजी अधिकार है। यह एक बेहद सामान्य और बुनियादी बात है। यह मुद्दा केवल उन एआई वीडियो तक सीमित नहीं है, जिनसे मैं पिछले कुछ दिनों से जूझ रही हूँ। न ही यह सिर्फ उन अनुभवों के बारे में है, जिनका सामना मैंने अपने करियर में किया है। यह महिलाओं के जीवन की उस सच्चाई से जुड़ा है, जिसमें उन्हें लगातार दूसरों की नजरों, फैसलों और सोच का सामना करना पड़ता है। उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए हर समय सतर्क रहना पड़ता है और अक्सर ऐसा महसूस होता है कि उनकी निजी सीमाओं को भी लोग अपनी सुविधा के हिसाब से परिभाषित करने का अधिकार रखते हैं।’

क्या है समस्या का समाधान?

अभिनेत्री ने आगे कहा ‘इस समस्या का समाधान सिर्फ यह कहने से नहीं हो सकता कि अपनी बेटियों की सुरक्षा करो। इसके साथ ही हमें उस सोच और परवरिश को भी बदलना होगा, जो लोगों के मन में यह धारणा पैदा करती है कि उन्हें किसी दूसरे व्यक्ति की सीमाओं का उल्लंघन करने का अधिकार है। इस बदलाव में ऐसे आदर्श पुरुषों को भी अहम भूमिका होगी, जिनके पास सही और गलत में फर्क करने की नैतिक समझ हो। जो बिना किसी डर या झिझक के स्पष्ट रूप से गलत के खिलाफ आवाज उठाते

का साहस रखते हों।’

अभिनेता का जताया आभार

जान्हवी ने जूनियर एनटीआर का शुक्रिया अदा करते हुए लिखा ‘मैं एनटीआर सर की बेहद आभारी हूँ कि उन्होंने इतनी मजबूती से अपना पक्ष रखा और इस तरह के उल्लंघन की कड़ी निंदा की। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, सर। जब कोई ऐसा व्यक्ति, जिसे लाखों लोग अपना आदर्श मानते हैं, किसी ऐसे मुद्दे पर आवाज उठाता है, जिसका उससे सीधे तौर पर कोई संबंध नहीं है, तो इससे उन तमाम महिलाओं को ताकत मिलती है, जिन्होंने अपने जीवन में कभी न कभी इस तरह के व्यवहार का सामना किया है।’

अभिनेत्री ने कहा ‘मैं चिरंजीवी सर, विजय और खुशबू मैम का भी शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ, जिन्होंने इस मुद्दे पर अपनी आवाज बुलंद की और घंटिया मानसिकता के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। मुझे उम्मीद है कि हमारे आसपास इस समय जो कुछ भी हो रहा है, वह इस तरह के उत्पीड़न में शामिल लोगों को आत्ममंथन करने के लिए मजबूर करेगा। क्या एक महिला को इतनी-सी मांग भी बहुत ज्यादा है कि उसे सिर्फ एक इंसान की तरह देखा और उसके साथ इंसान जैसा व्यवहार किया जाए? उसका शरीर। उसकी छवि। उसकी सीमाएं। उसका फैसला।’

क्या है पूरा मामला?

आपको बता दें कि जूनियर एनटीआर और जान्हवी कपूर की फिल्म ‘देवरा: पार्ट 1’ के गाने ‘चुट्टामले’ का एक मॉर्फ़ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। यह वीडियो आपत्तिजनक है। इस वीडियो के वायरल होने के बाद जूनियर एनटीआर ने नाराजगी जाहिर की थी और कानूनी एक्शन लेने की बात कही थी। कई और सेलेब्स भी उनके समर्थन में आए हैं।

साउथ के मेगास्टार चिरंजीवी ने भी इस वीडियो पर आपत्ति दर्ज करते हुए गुस्सा जाहिर किया है। वहीं विजय देवकोंडा ने भी अपराधियों को सजा देने की बात कही थी।

जब विजय ने तेज आवाज में की थी रश्मिका से बात पहली मुलाकात में ही रो पड़ीं थीं एक्ट्रेस

रश्मिका मंदाना और विजय देवरकोंडा की पहली मुलाकात कुछ खास अच्छी नहीं रही थी। दोनों ने फिल्म ‘गीता गोविंदम’ में साथ काम किया था। उस समय रश्मिका इंडस्ट्री में नई थीं, जबकि विजय इससे पहले कुछ फिल्मों में काम कर चुके थे। लेकिन ऐसा क्या हुआ कि एक्ट्रेस रो पड़ीं।

रश्मिका ने हाल ही में प्रखर गुप्ता के पॉडकास्ट में विजय के साथ अपनी पहली मुलाकात का किस्सा सुनाया। उन्होंने बताया कि जब वह पहली बार विजय से सेट पर मिली थीं, तो उन्हें ‘सर’ कहकर बुलाती थीं। इसकी वजह यह थी कि वह इंडस्ट्री में नई थीं और विजय तब तक तीन-चार फिल्मों में काम कर चुके थे।

रश्मिका ने बताया कि शूटिंग के पहले दिन वह सेट पर कोई म्यूजिक चला रही थीं। तभी विजय ने उनसे म्यूजिक बंद करने के लिए कहा। रश्मिका के मुताबिक, विजय ने कहा था, ‘ये म्यूजिक बंद करो।’

विजय ने इस घटना को याद करते हुए बताया कि वह स्वभाव से काफी सीधे और बेबाक हैं। उन्हें उस समय अंदाजा नहीं था कि उनकी बात रश्मिका को इतनी बुरी लग सकती है।

तेज आवाज में की थी रश्मिका से बात

विजय ने बताया कि उन्होंने रश्मिका से काफी तेज आवाज में कहा था, ‘तुम ये कैसी घटिया म्यूजिक बजा रही हो?’ विजय ने बताया कि दोनों को एक ही लॉकड कारवां शेयर करना पड़ता था। चूंकि उस समय वे दोनों बड़े स्टार नहीं थे, इसलिए कारवां का आधा हिस्सा रश्मिका और आधा हिस्सा विजय और उनकी टीम के लिए होता था।

हालांकि, विजय के लिए यह बात भले ही नॉर्मल थी, लेकिन रश्मिका को इससे काफी बुरा लगा। रश्मिका ने बताया कि वह उस समय नई थीं और उनके लिए यह एक नई जगह और नई इंडस्ट्री थी।

रो पड़ीं थीं एक्ट्रेस

विजय ने भी माना कि उनकी बात से रश्मिका काफी दुखी हुई थीं। उन्होंने बताया कि रश्मिका की आंखों में आंसू आ गए थे। उन्हें लगा था कि विजय उन्हें पसंद नहीं

करते हैं। रश्मिका ने बताया कि उस समय उन्होंने यह बात किसी से नहीं कही। उन्होंने इस घटना को काफी लंबे समय तक अपने मन में ही रखा। विजय ने भी बताया कि रश्मिका ने उन्हें इस बारे में काफी समय बाद बताया था। रश्मिका ने कहा कि लंबे समय तक उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा था।



बॉलीवुड में एंट्री से पहले कौन थीं रणवीर की सबसे पहली फैन?

रणवीर सिंह ने बीते दिनों एक टॉक शो पर अपने 23वें जन्मदिन पर अपनी बहन के खास तोहफे का जिक्र किया। रणवीर ने बताया था कि इसे वह अपने जीवन में प्रेरणा के रूप में देखते हैं।



फिल्म ‘धुरंधर’ और ‘धुरंधर द रिवेंज’ की रिलीज के बाद से अभिनेता रणवीर सिंह का फैन बेस काफी बढ़ चुका है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि एक्टर के बॉलीवुड डेब्यू के पहले से ही कोई उनका बहुत बड़ा फैन था। हाल ही में एक चैट शो पर रणवीर ने इस बारे में खुलासा किया था।

बहन ने जन्मदिन पर दिया तोहफा

हाल ही में रणवीर सिंह, सिमी गरेवाल के शो ‘रोदेवू विद सिमी गरेवाल’ में पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने अपनी बहन से जुड़े खास किस्से का जिक्र किया। रणवीर ने कहा, ‘मेरी बहन हमेशा से चाहती थीं कि मेरा सपना सच हो और मैं अभिनेता बनूं। मेरे 23वें जन्मदिन पर उन्होंने केक पर मोमबत्तियों की जगह मेरी छोटी-छोटी तस्वीरें बनाई और उन्हें यशराज फिल्मस के पोस्टरों पर मॉर्फ कर दिया

था। उन्होंने शाहरुख सर का चेहरा हटाकर मेरी तस्वीर ‘दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे’ और जॉन का चेहरा हटाकर मेरा चेहरा ‘धूम’ के पोस्टर पर लगा दिया था। बाद में मैंने केक से वो तस्वीरें उतारकर अपने कमरे में लगा ली थीं और आज देखिए, मेरा सपना सच हो गया।’

यशराज बैनर तले किया डेब्यू

बता दें रणवीर ने 2010 में यश राज फिल्मस द्वारा निर्मित फिल्म ‘बैड बाजा बारात’ से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की। इस फिल्म में अनुष्का शर्मा भी थीं। इस फिल्म के बाद संजय लीला भंसाली की फिल्म ‘बाजीराव मस्तानी’ और ‘पद्मावत’ ने उन्हें स्टार बना दिया। वहीं ‘धुरंधर’ से वह बॉलीवुड के मेगास्टार बन गए। आने वाले समय में उनकी फिल्म ‘प्रलय’ का भी फैंस को बेसब्री से इंतजार है।

‘धुरंधर’ फ्रेंचाइजी का कलेक्शन

- ‘धुरंधर’ 19 दिसंबर 2025 को रिलीज हुई थी।
- फिल्म ने 1,350 करोड़ का कलेक्शन किया था।
- वहीं ‘धुरंधर द रिवेंज’ 19 मार्च 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी।
- फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 1,605.43 करोड़ रुपये की कमाई की थी।
- ‘धुरंधर’ फ्रेंचाइजी की बात करें तो इस फिल्म ने 2500 करोड़ से ज्यादा की कमाई की थी।

‘हर चीज के लिए माता-पिता जिम्मेदार नहीं हो सकते’, ओटीटी सेंसरशिप पर बोलीं हरलीन सेठी

अभिनेत्री हरलीन सेठी ने अपने करीब एक दशक के करियर में ओटीटी पर कई प्रोजेक्ट्स में काम किया है। ‘ब्रोकन बट ब्यूटीफुल’, ‘सुल्तान ऑफ़ दिल्ली’, ‘कोहरा’ और ‘शक: द्रस्ट नो वन’ जैसे प्रोजेक्ट्स में उनके किरदारों को दर्शकों ने देखा है। पढ़िए क्या बोलीं हरलीन...

लंबे समय से ओटीटी का हिस्सा रही हरलीन से जब कंटेंट और सेंसरशिप को लेकर सवाल किया गया, तो उन्होंने कहानी कहने की आजादी के साथ बच्चों के डिजिटल एक्सपोजर पर भी बात की।

फिल्ममेकर को अपनी कहानी कहने का हक

हरलीन से पूछा गया कि ओटीटी पर कितना कंटेंट दिखाया जाए और कितना नहीं, इसे लेकर लगातार बहस होती है। इस पर उन्होंने कहा, ‘मैं प्रीडम ऑफ़ स्पीच में विश्वास करती हूँ। मुझे लगता है कि हर फिल्ममेकर को अपनी कहानी कहने का हक है। वह जो फिल्म बनाना चाहता है, जो कहानी बताना चाहता है, उसे बनाने का अधिकार उसके पास होना चाहिए।

आखिर में यह दर्शकों पर है कि उन्हें

क्या देखना है और क्या नहीं देखना है। मेरा मानना है कि आज सिर्फ फिल्मों और सीरीज की बात नहीं है। बच्चों के पास पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा डिजिटल एक्सपोजर है।’

बच्चों के लिए पैरेंटल गाइडेंस बहुत जरूरी

अभिनेत्री ने आगे कहा, ‘बच्चों के लिए पैरेंटल गाइडेंस बहुत जरूरी है। एक्सपोजर बहुत ज्यादा है। ऐसा नहीं है कि सिर्फ फिल्मों ही हैं। इतना सारा कंटेंट इंटरनेट पर है। टेक्नोलॉजी इतनी आगे आ गई है कि आप बच्चों को हर चीज से दूर नहीं रख सकते।

पहले बच्चे एक अलग तरह के माहौल में बड़े होते थे। परिवार के लोग उन्हें बताते थे कि क्या सही है और क्या गलत। अब बच्चों के पास आईपैड हैं, फोन हैं। स्कूल भी आईपैड देते हैं। हां, ये भी सच है कि आज के समय में हर चीज पर नजर रखना पैरेंट्स के लिए भी मुश्किल है।’

हर चीज के लिए पैरेंट्स जिम्मेदार नहीं

हरलीन के मुताबिक, बच्चों तक पहुंचने वाले कंटेंट को सिर्फ फिल्मों के नजरिए से देखना सही नहीं होगा। वह कहती हैं, ‘आज एक्सपोजर का लेवल बहुत अलग है। फोन बच्चों को उनकी सिन्योरिटी के लिए भी दिए जाते हैं। जमाना बदल गया है। ऐसे में आप कैसे कह सकते हैं कि यह सिर्फ मां-बाप की परवरिश की जगह से हो रहा है? क्योंकि आज बहुत कुछ है, जो बच्चों के आसपास है।’



बीते हफ्ते मुंबई इनकम टैक्स विभाग ने बॉलीवुड से जुड़े कई ठिकानों पर अचानक कार्रवाई शुरू की थी। इसके तहत विभाग ने कई बड़े प्रोडक्शन हाउस और फिल्मी हस्तियों के ठिकानों पर जांच शुरू कर दी। मामले में रकुलप्रीत सिंह और वासु भगनानी समेत कई नाम रडार पर आए। 20 से ज्यादा आईटी अधिकारियों की टीम वासु भगनानी के बांद्रा वेस्ट के पाली हिल के पूजा कासा इमारत पहुंची। आयकर विभाग की छापेमारी के सप्ताहभर बाद आज सोमवार को रकुल प्रीत सिंह ने चुप्पी तोड़ी है। इस बीच रकुल प्रीत सिंह ने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कर कहा कि वे पूरी ईमानदारी से टैक्स भरती हैं। वे एक जिम्मेदार नागरिक हैं। साथ ही सेना की पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखती हैं।

‘इंडस्ट्री में मेरा कोई ‘गॉडफादर’ नहीं’

रकुल प्रीत सिंह के हालिया पोस्ट में उनका दुख

‘मेरी कोई बेनामी संपत्ति नहीं’ आयकर विभाग की छापेमारी पर रकुल प्रीत ने तोड़ी चुप्पी

छलका है। उन्होंने कुछ ऑनलाइन रिपोर्टर पर बिना तथ्यों के खबरों की सनसनी बनाने का आरोप लगाया है। रकुल ने आईडी रेड को लेकर लिखा है, ‘वह तलाशी मेरे बारे में नहीं थी। मैं बताना चाहती हूँ कि मैं आम्ड फोर्सेज (सशस्त्र बलों) की पृष्ठभूमि से आती हूँ। इंडस्ट्री में मेरा कोई ‘गॉडफादर’ नहीं था। मैंने अपनी कड़ी मेहनत से यह मुकाम हासिल किया है और कानून का पालन करने वाले एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर 20 साल की उम्र से ही अपने टैक्स भरती आ रही हूँ।’

कहा- ‘गैर-कानूनी विदेशी लेन-देन में शामिल नहीं हूँ’

एक्ट्रेस आगे लिखती हैं, ‘मैं निजी तौर पर या किसी प्रोडक्शन हाउस की ओर से किसी भी तरह के गैर-कानूनी विदेशी लेन-देन में शामिल नहीं हूँ। मैं यह भी कहना चाहती हूँ कि देश या विदेश में कहीं भी, किसी के भी नाम पर मेरी कोई बेनामी संपत्ति नहीं है। न तो मुझे कभी किसी ने कोई संपत्ति तोहफे में दी है और न ही मैं सिद्धांत के तौर पर ऐसे महंगे तोहफे स्वीकार करती हूँ।

मैं उन सभी लोगों से अपील करती हूँ, जिन्होंने ये झूठी, दुर्भावनापूर्ण और अटकलों पर आधारित खबरें छापी हैं कि वे इन्हें वापस लें और सच्चाई स्पष्ट करें।’

खास-खबर

सरकार आपके द्वार से गांवों तक पहुंची सेवाएं

रायपुर। सेवा संकल्प अभियान 2026 के अंतर्गत ‘सेवा सेतु अभियान–सरकार आपके द्वार’ के माध्यम से शासकीय योजनाओं और सेवाओं को नागरिकों के और करीब पहुंचाया जा रहा है। इसी क्रम में जांजगीर-चांपा जिले के बलौदा विकासखंड के अटल समरसता भवन जावलपुर में विशेष सेवा सेतु शिविर आयोजित किया गया। शिविर में विभिन्न विभागों की सेवाएं और योजनाओं की जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने के साथ पात्र हितग्राहियों को मौके पर ही लाभान्वित किया गया। शिविर में आयोजित आजीविका ऋण मेला विशेष आकर्षण रहा। ग्रामीणों, स्व-सहायता समूहों और हितग्राहियों को स्वरोजगार एवं आजीविका गतिविधियों से जोड़ने के लिए कुल 336 प्रकरणों में 7,615 करोड़ रुपये की राशि प्रेषित की गई। वहीं 235 प्रकरणों में 10.9475 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई तथा 99 प्रकरणों में 5.37 करोड़ रुपये की राशि का वितरण किया गया।

एग्रीस्टेक का पंजीयन 30 अक्टूबर तक बढ़ा

दुर्ग। धान खरीदी विपणन वर्ष 2026–27 में किसानों एवं उनके सह-हिस्सेदारों का शत-प्रतिशत एग्रीस्टेक पंजीयन होना अनिवार्य है। इस हेतु जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक से सम्बद्ध सेवा सहकारी समिति में संचालित कॉमन सर्विस सेन्टर के माध्यम से एग्रीस्टेक पंजीयन का कार्य अपने आश्रित ग्रामों में शिविर आयोजित कर किया गया। जिला दुर्ग में कुल 87 समितियों के आश्रित ग्रामों में 10 सितम्बर से 30 सितम्बर 2026 तक शिविर का आयोजन किया गया था जिसकी समीक्षा करने पर अपेक्षाकृत प्रगति नहीं हुई है। जिले में 456941 बकेट क्लेम (सहमित सत्यापन) में से मात्र 140487 को पुर्ति हुई है। कलेक्टर अभिजीत सिंह ने स्पष्ट किया है कि बिना एग्रीस्टेक पंजीयन धान नहीं बिकेगा, सह खातेदारों का भी पंजीयन होना भी आवश्यक है।

सोलर हाईमास्ट से रोशन हुआ चोरभट्टी

कोरबा। पहले शाम ढलते ही घर से बाहर निकलने से पहले रास्ते की चिंता रहती थी। हाथ में टॉच या मोबाइल की रोशनी लेकर चलना पड़ता था, बारिश में सड़क किनारे की झाड़ियां और रास्ता ठीक से दिखाई नहीं देता था। अब गांव के चौक पर सोलर हाईमास्ट की रोशनी रहती है, इसलिए रात में बाजार से लौटना हो या किसी जरूरी काम से बाहर जाना, रास्ता साफ नजर आता है। ग्राम चोरभट्टी के एक ग्रामीण की यह बात गांव में सोलर हाईमास्ट से आए बदलाव को बयां करती है। कटघोरा विकासखंड के दूरस्थ ग्राम चोरभट्टी में पहले शाम के बाद चौक और आसपास के रास्तों पर पर्याप्त रोशनी नहीं होने से ग्रामीणों को रात के आवागमन में परेशानी होती थी।

पंखों को मिली रफ्तार: सरस्वती साइकिल योजना से बेटियों की शिक्षा की राह हुई आसान

दूरस्थ गांवों की छात्राओं के लिए साइकिल बनी स्कूल तक पहुंच का साधन, समय की बचत के साथ बढ़ा आत्मविश्वास

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। गांव की पगडंडियों और लंबी सड़कों से होकर स्कूल पहुंचने वाली बेटियों के लिए एक साइकिल केवल दो पहियों का साधन नहीं, बल्कि शिक्षा तक पहुंचने की राह आसान करने वाली साथी बन सकती है। घर से विद्यालय की दूरी, आने-जाने में लगने वाला समय, बदलता मौसम और परिवहन साधनों की कमी जैसी चुनौतियों के बीच सरस्वती साइकिल योजना दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं को नियमित रूप से विद्यालय पहुंचने में मदद कर रही है।

सरगुजा जिले के बतौली विकासखंड स्थित शासकीय हाई स्कूल सेदम की छात्राएं रजनी एक्का, गायत्री यादव, सोनिया, रजनी साहू और नीतू यादव भी इस बदलाव को अपने जीवन में महसूस कर रही हैं। कभी स्कूल पहुंचने के लिए पैदल लंबी दूरी तय करने वाली इन छात्राओं के लिए साइकिल मिलने के बाद आवागमन आसान हुआ है। समय की बचत हो रही है और किसी दूसरे व्यक्ति पर निर्भरता भी कम हुई है।

छत्तीसगढ़ शासन की सरस्वती साइकिल योजना के माध्यम से कक्षा 9वीं में अध्ययनरत पात्र



बेटियों के आत्मविश्वास को भी मिली नई ताकत

सरस्वती साइकिल योजना का प्रभाव केवल स्कूल तक की दूरी कम करने तक सीमित नहीं है। स्वयं साइकिल चलाकर विद्यालय जाना छात्राओं को अपने दैनिक आवागमन में अधिक आत्मनिर्भर भी बना रहा है। पहले जहां कई छात्राओं को पैदल चलना पड़ता था या किसी परिजन पर निर्भर रहना पड़ता था, वहीं अब वे स्वयं स्कूल पहुंच रही हैं। छात्राओं के लिए यह अनुभव आत्मविश्वास बढ़ाने वाला भी है। अपनी राह स्वयं तय कर स्कूल तक पहुंचना उन्हें आगे बढ़ने और अपने शैक्षणिक लक्ष्यों के प्रति दृढ़ रहने की प्रेरणा देता है।

छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल प्रदान की जाती है। इसका उद्देश्य छात्राओं को विद्यालय आने-जाने में सुविधा देने के साथ बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करना है।

योजना का महत्व विशेष रूप से उन ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में अधिक दिखाई देता है, जहां घर और विद्यालय के बीच दूरी अधिक है तथा सार्वजनिक परिवहन के साधन सीमित हैं। ऐसी परिस्थितियों में प्रतिदिन पैदल स्कूल आना-जाना छात्राओं के लिए समय और श्रम दोनों की दृष्टि से चुनौतीपूर्ण होता है। साइकिल

मिलने से यही दूरी कम समय में तय की जा सकती है। छात्राओं ने बताया कि साइकिल मिलने के बाद विद्यालय तक आने-जाने में काफी सुविधा हुई है। पहले पैदल चलने में अधिक समय और श्रम लगता था। अब कम समय में स्कूल पहुंचने से नियमित पढ़ाई में मदद मिल रही है। उनका कहना है कि साइकिल से आने-जाने में समय की बचत होने के कारण पढ़ाई के लिए अतिरिक्त समय मिलता है। घर के जरूरी काम और पढ़ाई के बीच बेहतर तालमेल बनाने में भी

आसानी हुई है। इस सुविधा से विद्यालय जाने का उत्साह भी बढ़ा है और वे आगे मन लगाकर पढ़ाई करते हुए उच्च शिक्षा हासिल करना चाहती हैं। किसी भी समाज की प्रगति में बालिका शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालय तक पहुंच जितनी आसान होगी, छात्राओं के लिए नियमित रूप से शिक्षा से जुड़े रहना उतना ही सुविधाजनक होगा। दूरस्थ क्षेत्रों में साइकिल जैसी व्यक्तिगत आवागमन सुविधा इसी आवश्यकता को पूरा करने में मदद करती है।

जल की हर बूंद सहेजने की मुहिम, ग्रामीणों को मिल रहा रोजगार

मनोरा के ओरडीह और आराकोना में जल संरक्षण कार्यों को मिली गति, 3800 कंटूर ट्रेंच का निर्माण



कंटूर ट्रेंच का निर्माण किया गया है। इसके साथ ही 5 आजीविका डबरी और 10 गैबियन संरचनाओं का निर्माण पूरा किया जा चुका है। ओरडीह में 10 एलबीसीडी का कार्य भी पूर्ण हो

गया है। आराकोना के लोहड़ा नाला में 10 बोल्टर चेकडैम बनाए जाने हैं, जिनमें से 6 का निर्माण पूरा हो चुका है और शेष कार्य प्रगतिरत हैं।

अलग-अलग प्रकृति की इन जल संरक्षण संरचनाओं के माध्यम से स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप वर्षा जल को रोकने और उसका अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

कंटूर ट्रेंच, गैबियन और बोल्टर चेकडैम जैसी संरचनाएं वर्षा जल के बहाव की गति को कम कर पानी को स्थानीय स्तर पर रोकने में सहायक होती हैं। इससे मिट्टी के कटाव को नियंत्रित करने के साथ भू-जल पुनर्भरण और आसपास के क्षेत्रों में नमी बनाए रखने में मदद मिलती है। इसका लाभ आगे चलकर खेती और अन्य आजीविका गतिविधियों में भी मिल सकता है। वहीं आजीविका डबरी ग्रामीण परिवारों के लिए जल संरक्षण के साथ सिंचाई, मछलीपालन एवं अन्य आयमूलक गतिविधियों का आधार बन सकती है। इस तरह जल संरक्षण के लिए तैयार की जा रही संरचनाएं प्राकृतिक संसाधनों को सहेजने के साथ ग्रामीण आजीविका को मजबूत करने की संभावनाएं भी बढ़ा रही हैं।

जल संरक्षण के साथ गांव में ही मिल रहा रोजगार

जल संवर्धन के इन कार्यों की एक महत्वपूर्ण विशेषता स्थानीय स्तर पर रोजगार का सृजन भी है। जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण में ग्रामीणों की भागीदारी से उन्हें गांव में ही रोजगार के अवसर मिल रहे हैं। इससे एक ओर वर्षा जल को सहेजने के लिए स्थायी परिसंपत्तियां तैयार हो रही हैं, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण परिवारों की आजीविका को भी सहारा मिल रहा है। जिले में स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों और ग्रामीण जरूरतों के अनुरूप जल संरक्षण कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। ओरडीह और आराकोना में किए जा रहे ये प्रयास वर्षा जल की हर बूंद को सहेजकर गांवों को जल की दृष्टि से अधिक सक्षम बनाने तथा जल संरक्षण को रोजगार और आजीविका से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं।

वैज्ञानिक तकनीकों से मछली उत्पादन बढ़ाने की दिशा में पहल, 300 मत्स्य किसानों को मिला प्रशिक्षण



श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। जशपुर जिले में मत्स्य किसानों को आधुनिक एवं वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़कर मछली उत्पादन और उनकी आय बढ़ाने की दिशा में पहल की जा रही है। इसी क्रम में मत्स्य पालन विभाग द्वारा जिले के सभी विकासखंडों से चयनित समूहों एवं समितियों से जुड़े 300 मत्स्य किसानों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में किसानों को वैज्ञानिक मत्स्य पालन की नवीन तकनीकों की जानकारी देने के साथ सफल मत्स्य पालन इकाइयों का प्रत्यक्ष अवलोकन भी कराया गया। प्रशिक्षण के दौरान मत्स्य किसानों ने जशपुर जिले में

पॉड लाइनर तकनीक के माध्यम से आधुनिक पद्धति से किए जा रहे मछली पालन का अवलोकन किया। किसानों को पॉड लाइनर आधारित मत्स्य पालन की तकनीक, बेहतर तालाब प्रबंधन और उत्पादन बढ़ाने के विभिन्न उपायों की व्यावहारिक जानकारी दी गई।

मत्स्य किसानों को सरगुजा जिले के रजपुरी जलाशय का भ्रमण भी कराया गया, जहां केज कल्चर तकनीक से मछली पालन किया जा रहा है। किसानों ने जलाशय आधारित केज कल्चर की कार्यप्रणाली को प्रत्यक्ष रूप से समझा और इसके माध्यम से मछली उत्पादन तथा आजीविका संवर्धन की संभावनाओं की जानकारी प्राप्त की।

मंत्री गजेन्द्र यादव स्कूल स्कूली बच्चों के बीच पहुंचकर सहज संवाद में जानी पढ़ाई और स्कूल की जरूरतें

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। स्कूल की छुट्टी के बाद घर लौट रहे विद्यार्थियों के लिए सोमवार का दिन उस समय खास बन गया, जब स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव अचानक उनके बीच पहुंचे और सहजता से बातचीत करने लगे। दुर्ग जिले में सेवा सेतु शिविर में शामिल होने ग्राम फेकारी पहुंचे मंत्री यादव कार्यक्रम से लौटते समय सेलूद चौक स्थित हाईस्कूल के विद्यार्थियों से मिले।

शिक्षा मंत्री को अपने बीच पाकर बच्चों में उत्साह दिखाई दिया और उन्होंने खुलकर अपनी पढ़ाई, स्कूल की गतिविधियों और आवश्यकताओं के बारे में चर्चा की। स्वामी



आत्मानंद शासकीय विद्यालय, सेलूद की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मंत्री यादव ने स्कूल परिसर में साइकिल स्टैंड, बाइंड्रीवाल एवं वॉलीबॉल ग्राउंड के निर्माण की घोषणा की।

सीके नायडु ट्रॉफी के लिए छत्तीसगढ़ अंडर-23 टीम घोषित

वरुण सिंह भुई को मिली कप्तानी

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ ने सीके नायडु ट्रॉफी अंडर-23 2026-27 के प्रथम तीन मुकाबलों के लिए छत्तीसगढ़ की टीम की घोषणा कर दी है। बीसीसीआई द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ की टीम 12 अक्टूबर 2026 से अपने अभियान की शुरुआत करेगी।

टीम की कप्तानी वरुण सिंह भुई को सौंपी गई है। सीके नायडु ट्रॉफी अंडर-23 के लिए घोषित टीम में प्रदेश के विभिन्न जिलों से खिलाड़ियों का चयन किया गया है। टीम में



अमब्रिश कुमार सिंह, अंकित कुमार, अनुराग साहू, आशीष कुमार डहरिया, बी. बालाजी राव

(विकेटकीपर), दर्शील भट्ट, दिवाकर ताप्रकार, जितेश धर्मेन्द्र कुमार, मनराज सिंह ढिल्लों, नवदीप समाले, प्रथम जाचक, साहिल रजत शरीफ, शोभित शर्मा, शाश्वत शारदा, वरुण सिंह भुई (कप्तान) और यश कुमार वर्दा शामिल हैं।

छत्तीसगढ़ का पहला मुकाबला 12 से 15 अक्टूबर 2026 तक जम्मू में जम्मू-कश्मीर के खिलाफ होगा। इसके बाद टीम भिलाई में लगातार दो मुकाबले खेलेगी। सीके नायडु ट्रॉफी में छत्तीसगढ़ की टीम से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है। शुरुआती तीन मुकाबलों के लिए घोषित टीम में युवा खिलाड़ियों को मौका दिया गया है, वहीं कप्तान वरुण सिंह भुई के नेतृत्व में टीम टूर्नामेंट में मजबूत शुरुआत करने के इरादे से मैदान में उतरेगी।

CAR DECOR

House Of Exclusive
Seat Cover,
Car Stereos Matting &
Sun Control Film &
Other Accessories

Shop No.3 Nafish Tower,
Opp. Indian Coffee House,
Akashganga, Bhilai

Mo.9300771925, 0788-4030919

K. Satyanarayan

ROCKEY INDUSTRIES FURNITURE PALACE

Deals in: (Steel & Wooden)
Luxury & Imported Furniture

Akash Ganga, Supela, Bhilai Ph. 2296430

SAIRAM

Mobile Accessories

मोबाईल शॉप में कार्य करने हेतु लड़कों की आवश्यकता है

7000415602

Shop No. 78, Himalaya Complex, Supela, Bhilai

चौरसिया ज्वेलर्स

आकर्षक सोने चांदी के आभूषणों के निर्माता एवं विक्रेता

बेन्वेक्स एवं प्रहलद उपलब्ध यहां
उचित व्याज दर पर धरवी रखी जाती है

मुक्तिधाम रोड, रामनगर, सुपेला, भिलाई

9827938211, 9827171332

Shri Vijay Enterprises

Sanitarywares, Tiles,
CPVC Pipes &
Bathroom Fittings etc.

Supela Market, Bhilai
PH. 0788-4030909, 2295573

